चकमक

जनवरी, 1994 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00

समुद्र में जीवन

रंजना मालवीय, पहली, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

सत्यप्रकाश सिंह तंवर, पांच वर्ष, हरदा, म.प्र.

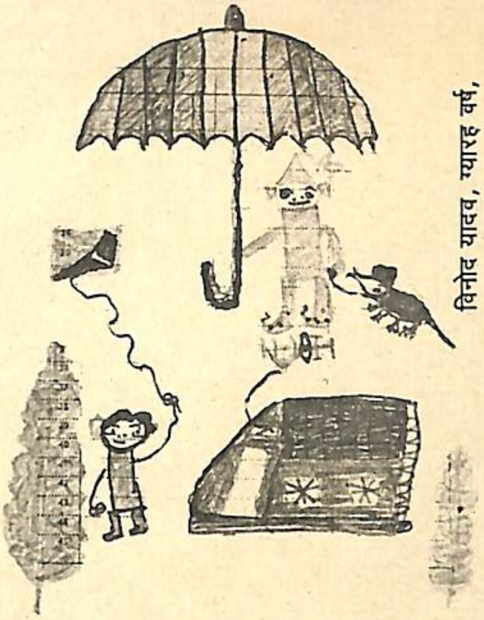

विनोद यादव, ग्यारह वर्ष,
ऐजवारा, शिवपुरी, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-9 अंक 7 जनवरी 1994

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/208,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फ़ोन : 563380

101वें अंक में...

विशेष

20 ❑ समुद्र में जीवन

कहानी

7 ❑ रेगिस्तान का डायनोसौर

कविताएँ

13 ❑ पृथ्वी एक किताब
19 ❑ सपने क्यों आते हैं?

धारावाहिक

17 ❑ गणित के खेल
40 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना? -5

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
6 ❑ हमारे वृक्ष-21 : नारियल
16 ❑ चित्रकथा-बिंदु
36 ❑ माथा-पच्ची

और यह भी

12 ❑ चकमक समाचार
14 ❑ कागज़ के खेल: सारस
33 ❑ चर्चा किताबों की
38 ❑ तुम भी बनाओ : टोकरी

आवरण परिचय

समुद्र में पाई जाने वाली एक जोकर-मछली समुद्री स्पंज के बीच। इस स्पंज को मरे हुए आदमी की उंगलियों के नाम से जाना जाता है।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

बैरंग

ईश्वरसिंह, सातवीं, पिपल्यामण्डी, मन्दसौर, म.प्र.

एक रोज़ मैं मेरे दोस्त राजू और दिनेश के साथ बैठा था। आम के नीचे ऐसी चर्चा चल रही थी। किसी बात पर दिनेश बोला, ''दोस्त राजू मेरे वैसे ही पैसे क्यों उठवाते हो?''

''दिनेश मैंने आपसे पैसे लिए हैं?''

दिनेश बोला, ''राजू यह बात नहीं है, मुझको किसी ने बैरंग डाला और डाक वाले ने मुझसे दो रुपए ले लिए। मैंने उसे खोला तो उसमें केवल इतना लिखा था 'नमस्कार दिनेश'।''

रवि बोला, ''दोस्त राजू अब तो तुमको मैं भी बैरंग डालूंगा।''

राजू बोला, ''मैं बैरंग लूंगा ही नहीं।''

राजू एक हफ्ते के बाद खातेगाँव गया। मुझको मालूम हुआ कि राजू खातेगाँव गया है। तो मैंने मतलब रवि ने उसी रोज़ खातेगाँव बैरंग डाला राजू के पास। राजू भूल गया था कि रवि बैरंग डालेगा और राजू ने बैरंग ले लिया। मैंने उसमें लिख दिया था कि 'राजू, क्या बैरंग ले लिया।'

फिर उसी रोज़ उसने मुझको एक कार्ड डाला। उसमें लिखा था कि, 'अब तुम बैरंग डालना, कभी नहीं लूंगा।' दूसरे दिन उसकी माँ की तबियत ख़राब हो गई और उसको उसके पिताजी ने बैरंग डाला। राजू ने वो बैरंग नहीं लिया। उसके पिताजी को मालूम हुआ तो उसी रोज़ राजू को खातेगाँव से बुलाया और उसके बाबूजी ने उसे खूब पीटा। राजू ने मेरे पास आकर मुझसे कट्टी ले ली।

❑ रविशंकर मीणा, आठवीं, कोलारी, देवास, म.प्र.

कौए ने परेशान किया

एक कौआ था। वह पेड़ में घोंसला रखे था। उस घोंसले में चार बच्चे थे। वह कई दिनों से हम लोगों को परेशान कर रहा था। एक दिन हम लोगों ने उसके घोंसले को गिराना चाहा। मगर वहाँ पर बहुत सारे कौए आ गए, तो हम नहीं गिरा पाए।

❑ राघवेन्द्र गर्ग, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

भूकम्प

पियूष, ग्यारह वर्ष, भावनगर, गुजरात

यह बात 1991 की है, 19 अक्टूबर को तीन बजकर पैंतालिस मिनिट पर उत्तरकाशी में भयंकर भूकम्प आया था। यह बहुत ही विनाशकारी भूकम्प था। सड़कों, पुलों और हज़ारों मकानों का विनाश हुआ। यहाँ तक कि उत्तरकाशी का बैंक भी ध्वस्त हो गया था। सैकड़ों गाँव तबाह हो गए। पहाड़ी रास्ते बन्द होने के कारण उनको मदद भी समय पर नहीं मिल सकी। तब सेना के हेलीकॉप्टरों की मदद से सैनिकों ने घायलों को अस्पताल पहुँचाया।

क़रीब छः-सात सौ आदमियों की मृत्यु हुई और हज़ारों घायल हुए। घायलों को अस्पताल में रखने की जगह नहीं हो रही थी इसलिए डाक्टरों ने तम्बू गाढ़कर घायलों का इलाज किया। गम्भीर घायलों को देहरादून, चण्डीगढ़ और दिल्ली के अस्पतालों में भेजा गया। भूकम्प के कारण पहाड़ खिसककर गंगा नदी में गिर जाने से गंगा का प्रवाह रुक गया। तब बारूद से विस्फोट करके पहाड़ तोड़ा गया। अगर हम आज भी उत्तरकाशी जाएँ तो हमें पता चल सकता है कि वह कितना विनाशकारी भूकम्प था।

❑ समीर सिंह, बरेठी, उत्तरकाशी, उ.प्र.

मेरा पन्ना

बिल्ली से दोस्ती

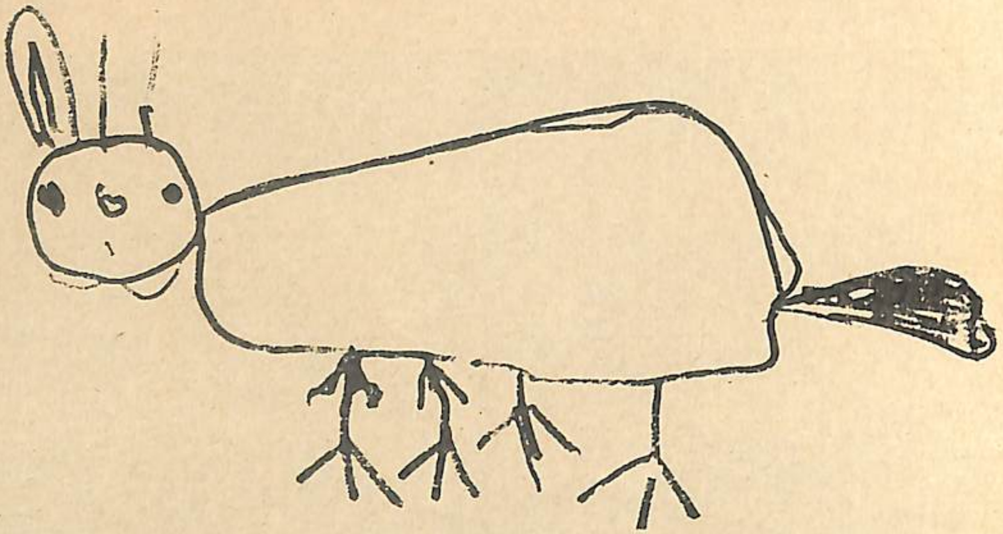

नीलम नेगी, पाँच वर्ष नानतीन बाड़ी, देहरादून, उ.प्र.

बहुत दिनों की बात है। मैं और मेरी सहेली घूमने जा रहे थे। रास्ते में एक बिल्ली का बच्चा मिल गया। मेरी सहेली बिल्ली से बहुत डरती थी। मैंने बिल्ली को पकड़ लिया। मेरी सहेली डरकर घर भाग गई। मैं बिल्ली को लेकर घर आई। मैंने बिल्ली को दूध दिया। बिल्ली मेरे घर पे पल गई।

दूसरे दिन मैं अपनी सहेली को घर लाई। मैंने उसे समझाया कि बिल्ली से डरते नहीं। ये सब जानवर तो हमारे दोस्त होते हैं। तब हम दोनों ने बिल्ली को रोटी दी।

❑ हबीबा खान, बारह वर्ष, रायसेन, म.प्र.

सब ऐसा क्यों करते?

सुकाश पाटीदार, छठवीं, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

सब टी.वी. देखा करते
अख़बार पत्रिका कोई नहीं लेते
माँ सब ऐसा क्यों करते हैं?
क्यों नहीं अख़बार पढ़ते?
क्यों नहीं पत्रिका लेते?
क्यों सब ध्यान नहीं देते?
माँ सब ऐसा क्यों करते हैं?

❑ गोवर्धन राठौड़, दसवीं, मण्डवाड़ा, खरगोन, म.प्र.

कैलाश पर एक कहानी

कैलाश एक अच्छा लड़का है। वह पढ़ने में हीरो और खेल में ज़ीरो है। वह मेरा अच्छा दोस्त है। वह कभी-कभी मस्ती भी करता है। वह किसी से लड़ता नहीं।

एक दिन उसकी लड़ाई सुरेश से हो गई। सुरेश ने उससे पेन के बारे में लड़ाई की। फिर सुरेश ने उसे जम-से मार दिया उसके हाथ से खून गिरने लगा। सुरेश की शिकायत बड़ी मैडम के पास चली गई। बड़ी मैडम ने कहा कि सुरेश तुम अपने मम्मी-पापा को लेकर आना तभी तुम स्कूल आना। सुरेश को अपनी गलती पर पछतावा हुआ।

❑ अरूणेश सिंह, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

अबीर महेन्द्रू, आठ वर्ष, दिल्ली

हमने झूला झूला

एक बार हमारे गाँव में झूला आया। तो हमने अपनी सहेली से कहा कि मैं तो इस झूले में अवश्य झूलूँगी। सहेली कहने लगी मैं भी झूलूँगी। तो हम दोनों ने वहीं सलाह की कि हम तो अवश्य झूलेंगे।

फिर हम दोनों घर आए और मम्मी से पैसे माँगे। तो मेरी मम्मी बोली कि किसलिए पैसे चाहिए। तो मैंने कहा कि अपने गाँव में एक झूला आया है। मैं झूलना चाहती हूँ। इसलिए मुझे पैसे चाहिए। पर सहेली मेरे घर आई और कहने लगी कि मेरी मम्मी ने मुझसे पूछा कि किसलिए पैसे चाहिए। तो मैंने कुछ ना कहा तो मेरी मम्मी ने पैसे नहीं दिए। तब मैंने कहा चलो मैं अपनी मम्मी से माँग देती हूँ। मैंने अपनी मम्मी से पैसे माँगे तो मम्मी ने पैसे दिए। हम दोनों झूले के पास गईं। पैसे दिए और हम दोनों झूले में बैठ गए। तब झूला चालू हुआ तो हम लोगों को डर लगा।

झूला थोड़ी देर चला। फिर झूला रुका तो हम दोनों झूले से उतरे। फिर कुछ डर नहीं लगा। फिर हम बार-बार झूलने लगे।

❑ अनीता जैन, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

नारियल

नारियल को तो तुम सभी जानते-पहचानते हो। कईयों ने तो इसके पेड़ भी देखे होंगे। नारियल के पेड़ आमतौर पर समुद्र के किनारे ही ज्यादा दिखाई पड़ते हैं। बंगाल से लेकर बम्बई तक इसकी खेती होती है। समुद्र की हवा लगने से नारियल के पेड़ जल्दी बढ़ते हैं, इस हवा में नमक का असर जो होता है। ऐसी ज़मीन जिसमें नमक की मात्रा ज़्यादा हो नारियल के पेड़ के लिए फ़ायदेमंद होती है। समुद्र से दूर के इलाकों में जहाँ नारियल के पेड़ लगाए जाते हैं वहाँ भी हर वर्ष बारिश में इसकी जड़ के पास नमक गाढ़ा जाता है।

नारियल के पेड़ कई क़िस्म के होते हैं। कोई पेड़ बहुत लम्बा होता है तो कोई बहुत छोटा। फलों का आकार भी फर्क-फर्क होता है। लेकिन अलग-अलग क़िस्मों के पेड़ों में पत्ते लगभग समान होते हैं। पेड़ में डालें नहीं होतीं बल्कि एक-एक डाल के रूप में एक-एक पत्ता ही होता है। डंठल जहाँ से तने पर जुड़ा होता है डंठल की वो जगह सख़्त और मोटी होती है। डंठल के दोनों ओर पतली, कड़ी आगे से नुकीली कई उपपत्तियाँ होती हैं। डालनुमा पत्ते की लम्बाई बारह से अठारह फुट तक होती है। और इसकी एक उपपत्ती दो से तीन फुट तक लम्बी होती है।

नारियल के पेड़ में फूल गुच्छों में खिलते हैं फूलों का रंग पीलापन-सा लिए हुए होता है। नर और मादा दोनों फूल एक ही पेड़ पर लगे होते हैं। फल साल में दो बार लगते हैं। एक बार शरद ऋतु में दूसरी बार बसंत में। फल बड़े, अण्डाकार होते हैं। फल शुरू में हरे रंग का और पकने पर भूरे रंग का हो जाता है। फल के ऊपर का छिलका मोटा, सख़्त होता है। भीतर सफ़ेद रंग का गूदा होता है। फल के अन्दर मीठा पानी होता है। नारियल पुराना होने पर गूदा मोटा हो जाता है और पानी सूख जाता है। नारियल फल से ही नए पेड़ लगाए जाते हैं।

नारियल के पेड़ का हर हिस्सा किसी न किसी रूप में काम में आता है। फल के छिलके से जो रेशे निकलते है उन्हें जटा भी कहते हैं। इन्हीं जटाओं से चटाई, रस्सी, गद्दे आदि कई चीज़ें बनाई जाती हैं। नारियल की जटाओं से बनने वाली तमाम चीज़ों को बनाने में हज़ारों लोग लगे हैं। इससे बनी चीज़ें हमारे देश में तो बिकती ही हैं विदेशों में भी बिक्री के लिए जाती हैं। इसके अतिरिक्त नारियल खाने में कई-कई तरीक़ों से उपयोग में लाया जाता है। नारियल का तेल खाने और सिर में लगाने के काम में बहुत बड़ी मात्रा में उपयोग होता है। नारियल का पानी पेट के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। दक्षिण भारत में नारियल अपनी उपयोगिता के कारण 'हरा सोना' के नाम से विख्यात है। वहाँ समुद्र तट पर लोग वर्षा ऋतु के अंत में एक त्योहार मनाते है जिसमें नारियल को समुद्र (वरूण) को चढ़ाया जाता है इसे 'नारिकेल दिवस' कहते हैं।

अंग्रेजी में नारियल के पेड़ को कोकोनट ट्री (COCONUT TREE) कहते हैं।

□□

रेगिस्तान का डायनोसौर

❑ ताजिमा शिन्ज़ी

यह कोई बहुत पहले की बात नहीं है। एक दिन सौदागरों और ऊँटों का एक कारवाँ ऊँटों की पीठ पर बेहतरीन दर्ज़े के सुगन्धित तेलों की कई हंडियाँ लेकर एक लम्बे-चौड़े रेगिस्तान के पार जा रहा था। ये सौदागर पहली बार बाज़ार में तेल बेचने जा रहे थे। जब वे रेगिस्तान के बीचोंबीच पहुँचे तो उनके बीच एक बड़ा भारी विवाद उठ खड़ा हुआ।

यह रहा उनके झगड़े का कारण। ध्यान से सुनिए -

इस कारवाँ में शामिल सौदागर इस बात पर एक मत नहीं हो सके कि सुगन्धित तेल को बेचने के बाद वे पैसे को आपस में कैसे बाँटेंगे। रेगिस्तान को पार करते-करते वे बहस करते रहे, लेकिन झगड़े का फ़ैसला नहीं कर सके। आख़िरकार, सौदागरों ने एक नखलिस्तान में रुके अपने ऊँटों को खजूर के पेड़ों के साथ बाँधा और गोलबन्द होकर इस समस्या पर बातचीत करने लगे।

बोलनेवालों में सबसे पहला था, झुके

कन्धोंवाला बूढ़ा, जिसकी आँखें चालाकी-भरी थीं। ऐसा नाटक करते हुए जैसे कि उसे सभी चीज़ों के बारे में सब कुछ मालूम हो, उसने बड़े घमण्डी स्वर में कहना शुरू किया, ''बेशक़, हर एक आदमी ध्यान दे, हमें तेल बेचकर पैसे को इस तरह बाँटना चाहिए। सबसे बुज़ुर्ग आदमी को सबसे ज़्यादा रक़म मिलनी चाहिए, दूसरे सबसे बूढ़े आदमी को उससे कम और इसी तरह आगे। आख़िर, बहुत, बहुत समय पहले खुदा ने इसी तरह से तो तय किया था। इसे इस तरह से समझो - वह कौन था जिसने तुम नौजवान लोगों को ख़रीद-फ़रोख्त के बारे में सिखाया? बिल्कुल ठीक, वे हमीं तो थे, तुम्हारे बुज़ुर्ग और इसे भूलना मत! आजकल के नौजवानों को शुक्रगुज़ार होना तो बिल्कुल भी नहीं आता।''

जैसे ही बूढ़े आदमी ने बात ख़त्म की, एक नौजवान बोलने को उठ खड़ा हुआ, जिसकी मूँछें साइकिल की हैंडलबार की तरह ऐंठी और मुड़ी थीं और जिसने अपने सिर पर एक सफ़ेद पगड़ी लपेटी हुई थी। वह अपने शब्द बहुत ही ध्यान से चुन रहा था और अपनी तीखी नज़रों से आसमानी छोर की ओर देख रहा था, ''इसमें कोई शक़ नहीं कि सबसे अधिक पैसा उन्हें मिलना चाहिए, जो इस तेल को बेचने की सबसे ज़्यादा कोशिश करते हैं। हम उन बूढ़ों को इतना पैसा क्यों दें, जो हमेशा यह कहते हैं कि उनका बदन दुखता है और उन्हें आराम की ज़रूरत है और जो थक जाते हैं तथा इतना सारा वक़्त सोने में लगा देते हैं। ये हम नौजवान लोग ही हैं जो दिन-रात काम में जुटे रहते हैं। अगर काम के हिसाब से पैसा मिलेगा तो हम नौजवान लोग और अधिक मेहनत से काम करेंगे।''

इस पर ''लेकिन.... तो....'', दायरे के बाहर की तरफ़ बैठे एक छोटे-से, ज़र्द चेहरेवाले घबराए-से आदमी की आवाज़ सुनाई दी और फिर गुस्से-भरी आवाज़ में उसने कहा, ''मैं तो शुरू से यही कह रहा था। इस तरह के झगड़े को निपटाने का एकमात्र विश्वसनीय तरीक़ा है इस दुनिया में स्थापित व्यवस्था। आपके ख़्याल में 'वंश परम्परा' और 'वर्ग' जैसे महत्वपूर्ण नियम किसलिए बने हैं? दरअसल सबसे ज़्यादा पैसा उन्हें मिलना चाहिए जो जन्म से ही सर्वोच्च वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। दोस्तो, आख़िर यह शर्म की बात नहीं है कि हम पैसे के मामले को लेकर झगड़ा करें? ओह, मैं तो यह बताना भूल ही गया कि पिता की ओर से मैं महाराजाओं के देश के एक राजा की संतान हूँ।''

''बहुत हो चुका! अब एक भी शब्द और नहीं!'' एक चौथा आदमी चिल्लाया। यह आदमी जिसका दुबला-पतला शरीर एक फटे कपड़े में ढका हुआ था और जिसके बाल बिखरे हुए थे, आँखें नचा-नचाकर बोलने लगा, ''आपमें एक ठो भी अइसा नहीं है, जिसका दिल कोमल हो। अगर आपमें ज़रा-सा भी रहम रहता न तो हम समझते हैं कि आप अइसी कठोर अउर मतलबी बात नहीं बोलते। देखिए, अगर अमीर लोग तेल बेचकर पइसा नाहीं भी पाते हैं तो ऊ भूख से मर नहीं जाएंगे। लेकिन ग़रीब लोग का बात दूसरा है। वह

अलग है। अगर इसे अपना हिस्सा नहीं मिलेगा तो वह तो भूख से मर ही जाएगा न! हाँ, इतिहास में भी लोग ग़रीब पर ही तरस खाते हैं न! ग़रीबी में जनम लेने पर, ऊ कभी भी भरपेट खाना नहीं खाया...।"

जब इस आदमी ने अपना रूखा भाषण समाप्त किया, सूरज दूर क्षितिज के नीचे डूबने को था। गोल बाँधे बैठे सौदागरों की परछाइयाँ रेगिस्तान की ठण्डी रेत में लम्बी हो गईं और सौदागरों को एकाएक अहसास हुआ कि वे सचमुच कितने थके हुए हैं।

"इस तरह बहस कर रहा है..." अपनी सफ़ेद दाढ़ी को ध्यानपूर्वक सहलाते हुए पाँचवाँ गुर्राया, "दिखता नहीं कि इस झगड़े का अन्त होनेवाला है? लगता है आप सबमें अक़्ल की थोड़ी-सी कमी है। अक़्ल की कमी की वज़ह से ज़िन्दगी-भर नुक़सान ही उठाना पड़ता है। सुनो, सभी को सन्तुष्ट करने के लिए हमारी मेहनत से कमाई गई दौलत सबमें बराबर बाँट देनी चाहिए - यही इस मामले को सुलझाने का सबसे अक़्लमंद तरीक़ा है, क्योंकि बेवक़ूफ़ी सबको तबाह कर देती है।" अपने छोटे-से भाषण को समाप्त करके वह व्यक्ति सन्तुष्ट होकर बैठ गया।

एकाएक, एक काली दाढ़ीवाला आदमी उछल पड़ा, जो गिरोह में सबसे बड़ा और तगड़ा था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और गुर्राया, "जिसकी लाठी उसकी भैंस!" भयावह आवाज़ में बोलते हुए उसने अपने सभी हैरान साथियों पर नज़र डाली। शाम के ढलते सूरज में उसका लाल चेहरा उसे और भी डरावना बना रहा था।

"समझे? चाहे रेगिस्तान के बीचोंबीच हो या शहर के अन्दर, सबसे शक्तिशाली हथियार, सबसे ताक़तवर तलवार वाला बादशाह होता है। राजा कौन है, इसे तय करने का सबसे आसान तरीक़ा है, सभी अपनी-अपनी तलवारें निकाल लो!" इसके साथ ही काली दाढ़ी वाले शैतान ने अपनी तलवार अपने ठीक सामने बैठे एक आदमी के सीने में घुसेड़ दी, जो अभी अपनी तलवार निकालने ही जा रहा था।

ख़ैर, झगड़ा अब एक आसान-सी बहस तक सीमित नहीं रह गया था। तगड़े और कमज़ोर, सभी सौदागरों ने तलवारें निकाल लीं और एक दूसरे को बिना देखे मारने-काटने लगे।

ग़दर मच गया! शोर और गड़बड़ी के बीच कारवाँ के लोग बिना सोचे-समझे, जो भी नज़दीक था, उसे मारने लगे। एक-एक करके आदमी गिर पड़े। कमज़ोर पहले गिरे और रेगिस्तान की रेत में खून का तालाब धीरे-धीरे फैलने लगा।

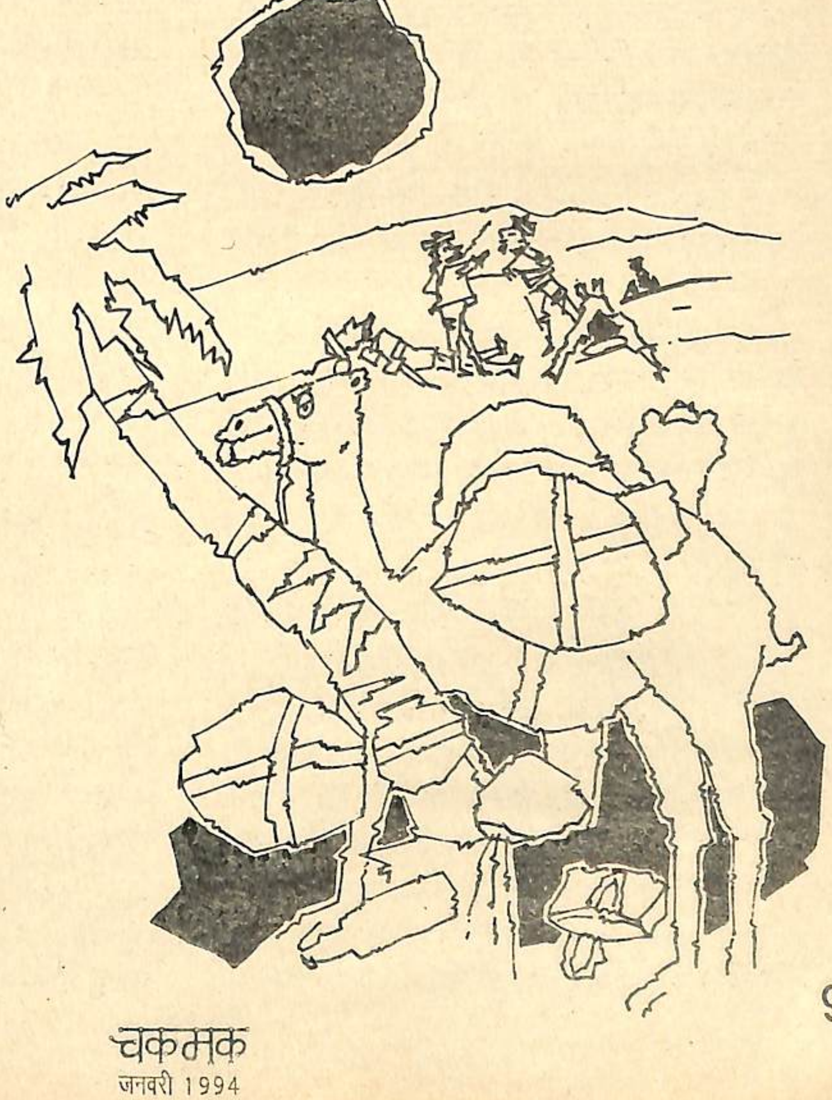

इन लोगों के लड़ने की आवाज़ों और शाम की धूप में चमकती तलवारों से घबराकर खजूरों में बँधे ऊँट बेचैन हो उठे और हिलने-डुलने तथा पैर पटकने लगे। उनकी पीठों पर रखे बर्तन गिर पड़े और ज़मीन से टकराकर चूर-चूर हो गए और क़ीमती तेल भी धीरे-धीरे रेत में समा गया। लेकिन फिर भी इस पर किसी आदमी ने ग़ौर नहीं किया। वे तो एक-दूसरे को मारने में इतने मशगूल थे कि वे तेल के बारे में बिल्कुल भूल गए थे।

वे कितनी देर लड़ते रहे, कह पाना मुश्किल है। आख़िर एक-एक करके कारवाँ के लोग ढेर हो गए। सिर्फ़ काली दाढ़ीवाला और सिर पर सफ़ेद पगड़ीवाला नौजवान ही बच रहे।

जब साँझ ढल रही थी तो उनकी तलवारों के टकराते समय रेत में उड़ती आग की चिनगारियाँ देखी जा सकती थीं। लेकिन उनके लड़ने की आवाज़ भी जल्दी ही ख़त्म हो गई। दोनों आदमी, तलवारों के कई घावों से ढके, रेत में गिर पड़े। थकान से उनमें बोलने तक की ताक़त भी नहीं रही थी।

उस समय एक नया चाँद उभर रहा था और उस रात आसमान इतने सारे चमकते तारों से भरा था कि उन्हें गिनना भी मुश्किल था। रेगिस्तान में एक बार फिर शान्ति थी तथा चाँद की नीली-सफ़ेद रोशनी में सौदागरों की लाशें, उनके चकनाचूर बर्तन और उनके ऊँट, जो अभी भी पेड़ों से बँधे थे पर अब शान्त हो गए थे और ताज़े दिखाई दे रहे थे।

तभी रेगिस्तान की रेत धीरे-धीरे उठने लगी और जल्दी ही रेत का एक पहाड़-सा बन गया। फिर टनों रेत के खिसकने की आवाज़ के साथ एक भीमकाय डायनोसौर रेत के ढेर से प्रकट हुआ।

यह डायनोसौर उस गहरी रेत में हज़ारों सालों से सोया हुआ था, लेकिन उसे कभी भी भूख-प्यास महसूस नहीं हुई थी, क्योंकि उसके ठीक सिर के ऊपर ही यह नखलिस्तान था। इस नखलिस्तान के ठीक बीचोंबीच यह झरना था और हर रोज़ बहुत-सा साफ़, ठण्डा पानी झरने में से निकलकर इस डायनोसौर के मुँह में गिरता था।

इस भीमकाय जानवर की पीठ पर बहुत-से लम्बे काँटे थे जो आकाश को चीरते-से लगते थे और चाँदनी में अजीब-से लग रहे थे। उसके चेहरे पर दो बड़ी-बड़ी लाल आँखें चमक रही थीं और उसके मुँह में ऊबड़-खाबड़ दाँतों की क़तारें थीं जो इतनी बड़ी और शक्तिशाली थीं कि चट्टानों को चबाकर चूर कर दें।

डायनोसौर थोड़ी देर खड़ा रहा, धीरे-धीरे अपनी थूथन को वहाँ पड़े हुए आदमियों को देखने के लिए घुमाता हुआ। फिर धीरे-से झुका और अपना बड़ा-सा मुँह खोलकर उन्हें एक-एक करके खाने लगा। इनमें कुछ ऐसे भी थे जो आख़िरी साँस लेते हुए कराह रहे थे और कुछ ऐसे भी जो बुरी तरह घायल होने के बावजूद हिल-डुल रहे थे। लेकिन डायनोसौर ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। डरावनी, गटकने और चबाने वाली आवाज़ों के साथ वह उन्हें खाता रहा और आख़िरी लाश को ख़त्म करने के बाद उसने ज़ोर से छींक मारी और फिर खुद से बातें करने लगा।

"ओह, कितनी हाय-तौबा मची थी। ये इन्सान भी काफ़ी शोर-शराबे वाली चीज़ हैं। समझ में नहीं आता कि ये आपस में इतनी ज़ोर-ज़ोर से क्यों बहस करते हैं? और इसे हमेशा ख़त्म करते हैं एक-दूसरे से झगड़ा करके। मेरा इरादा अगले पचास हज़ार साल तक सोये रहने का है, क्योंकि मेरे ख़याल से तब तक धरती पर कुछ शान्ति हो जाएगी।"

डायनोसौर ने ज़ोर की डकार ली।

"ख़ैर, क़िस्सा यूँ शुरू हुआ। इन इन्सानों ने ठीक मेरे सिर पर बहस शुरू कर दी और मुझे जगा दिया। जल्दी ही इधर-उधर भागमभाग होने लगी तथा तलवारें टकराने लगीं। फिर सुगन्धित तेल की इतनी बढ़िया खुशबू ने मेरी नाक को गुदगुदाया। इस सबके कारण मैं सो नहीं सका, इसलिए मुझे यहाँ ऊपर आना पड़ा और मैंने यह विनाश देखा।"

डायनोसौर ने फिर अपनी पीठ टेढ़ी की और धीरे-से रेत पर बैठ गया। उसने अपनी पूँछ को समेट लिया ताकि वह काँटों में न उलझ जाए। फिर

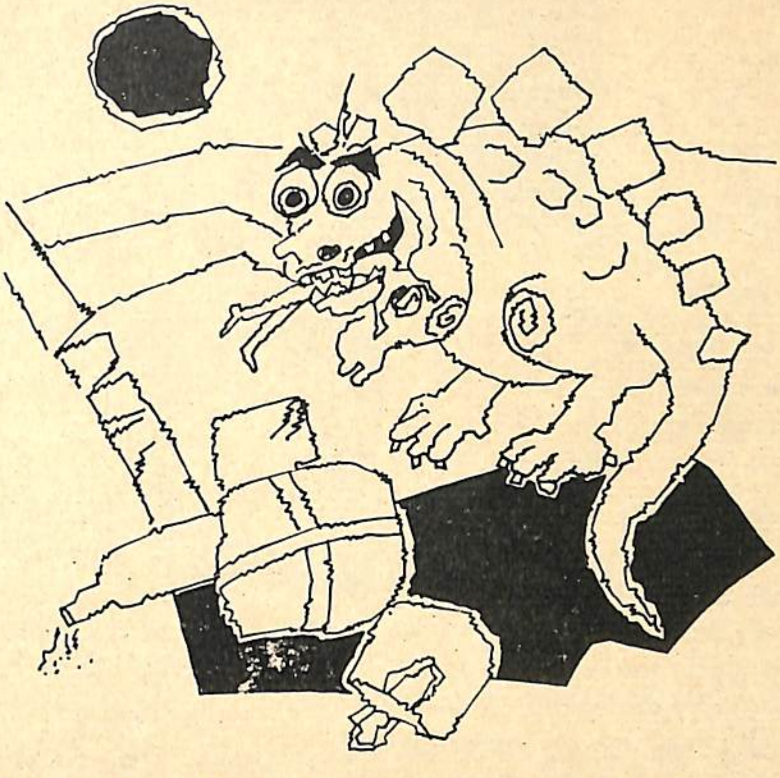

रात के साफ़ आसमान में चमकते हुए सितारों को देखा।

"आह, सितारे उस समय से बिल्कुल भी नहीं बदले हैं, जब इस धरती पर हम डायनोसौरों का साम्राज्य था...हमारे वक़्त में भी लड़ाई कभी नहीं थमी और एक-एक करके हमारे बहुत-से दोस्त मर गए। सभी, हर एक!" डायनोसौर ने गहरे अवसाद से कहा, "मर गए और खप गए...मेरे सभी भाई-बहन, दोस्त सभी मर गए।"

"इनसे लड़ने के बाद और उन सबको मार देने के बाद मैंने सबको अपना दोस्त मानने से इंकार कर दिया था। मैंने शान्त रेगिस्तान के नीचे उस समय तक सोये रहने का फ़ैसला किया था जब तक कि सारी लड़ाई समाप्त नहीं हो जाती। लेकिन, ख़ैर, अब इन्सानों की बारी है। ये बेचारे दो टाँगोंवाले छोटे-छोटे प्राणी दिनों-दिन बढ़ते चले गए, बढ़ते चले गए। इन्होंने फिर सारी धरती को ढक लिया और अब ये इधर-उधर लड़ने-झगड़ने लगे हैं। मैं बता सकता हूँ कि अब क्या होनेवाला है? अगर ये इसी तरह लड़ते रहे तो जल्दी ही समाप्त हो जाएंगे। कितने दुख की बात है!"

डायनोसौर ने धीरे-से अपनी आँखें बन्द कीं और अपने विशाल पेट में शुरू हुई एक बड़ी-सी डकार को रोका, फिर अपनी बड़ी-बड़ी लाल आँखों को खोलकर इधर-उधर घुमाया। लगता था अतीत में कुछ घटा था, उसे याद करने का यत्न कर रहा हो।

एक बड़ा-सा आँसू उसकी आँख में चमक उठा। फिर उस भीमकाय डायनोसौर ने एक गहरी साँस भरी और धड़ाम से रेत पर गिर गया। कुछ ही मिनटों में वह एक पहाड़नुमा जीवावशेष बन गया था।

उसी समय आकाश में, भोर के वक़्त, रेगिस्तान के ऊपर एक आश्चर्यजनक इन्द्रधनुष दिखाई दिया, जो इतना बड़ा था कि लगता था कि वह आकाश को तारों समेत लील जाएगा।

"क्या यह मृगतृष्णा है?" रेगिस्तान के आसमान में चारों तरफ़ एक फुसफुसाहट-सी फैल गई जिसे हवाओं ने ज़मीन और उसके भी परे बिखरा दिया।

अंग्रेजी से अनुवाद : हरीश नारंग

(साहित्य अकादमी के सौजन्य से)

चकमक का सौवाँ अंक जारी हुआ!

11 जनवरी,94 को भोपाल के जवाहर बाल भवन में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने चकमक का सौवाँ अंक जारी किया।

जवाहर बाल भवन का हॉल बच्चों और अन्य आमंत्रितों से खचाखच भरा हुआ था। सौवें अंक में प्रकाशित रचनाकारों में से एक भोपाल की टीना मिश्रा ने रंग-बिरंगे रूमाल में लिपटी चकमक की दो प्रतियाँ मुख्यमंत्री को दीं। जब मुख्यमंत्री ने चकमक की प्रतियाँ रूमाल से बाहर निकालीं तो टीना ने कहा, ' एक चकमक आपकी है, एक हमारी।' मुख्यमंत्री श्री सिंह ने टीना के अलावा भोपाल के अन्य तीन बाल रचनाकारों को चकमक की एक-एक प्रति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत, 'क्यों आसमान में चकमक करते तारे' गीत से हुई। इस गीत को भोपाल के शासकीय बाब-ए-आली माध्यमिक विद्यालय, शासकीय सुलतानिया कन्या हाईस्कूल तथा सेंट मेंरीज़ कॉन्वेंट स्कूल की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। गीत के बाद चकमक के सम्पादक श्री विनोद रायना ने चकमक का संक्षिप्त परिचय दिया।

मुख्यमंत्री श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा, 'बच्चों के मन में अनंत जिज्ञासा होती है और इस जिज्ञासा भाव को समझकर यदि उन्हें सहज विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की शिक्षा दी जाए तो यह शिक्षा अज्ञान का नाश कर सकती है।'

इस अवसर पर एक बाल मेले का आयोजन भी किया गया। इसमें भोपाल के चकमक क्लबों तथा शासकीय नवीन सरोजनी नायडू कन्या हाईस्कूल, शासकीय सरदार पटेल माध्यमिक विद्यालय, शासकीय नवीन सुभाष माध्यमिक विद्यालय आदि के बच्चों ने भाग लिया।

सम्मान समारोह

भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर का 16 वाँ सम्मान समारोह 'बालहंस' के सहयोग से गत 16 जनवरी, 94 को जयपुर में आयोजित किया गया। समारोह में ऐसे रचनाकारों को सम्मानित किया गया जो बच्चों के लिए लिखते हैं या अन्य किसी रूप में बच्चों के साहित्य से जुड़े हैं।

संस्थान ने देश भर से विभिन्न भाषाओं के तेरह रचनाकारों को चुना था। ये रचनाकार हैं- कु. कमल मुसद्दी, विश्वनाथ त्रिपाठी (कानपुर), श्रीमती सुरेखा पणंदीकर (दिल्ली), श्रीमती कृष्णा नागर, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम (लखनऊ), श्रीमती पद्मा चौगांवकर (विदिशा), श्रीमती सावित्री परमार (जयपुर), जगदीशचंद्र शर्मा (गिलूंड), मंगल सक्सेना (उदयपुर), अनंत पै (बम्बई), यादवेन्द्र चंद्र शर्मा (बीकानेर), एन. ई. विश्वनाथ अय्यर (तिरुअनंतपुरम्) तथा राजेश उत्साही (भोपाल)।

संस्थान ने कानपुर की द्विव्या अग्रवाल को भी मेधावी छात्रा के रूप में भी पुरस्कृत किया। बालहंस द्वारा चुने गए राजस्थान के दो प्रतिभाशाली बच्चों-चिन्मय कुलश्रेष्ठ (उदयपुर) को कविता तथा मीनाक्षी कालानी (नरेना) को चित्रकला के लिए पुरस्कृत किया गया। इसी समारोह में कानपुर के एक अन्य रचनाकार शिवचरण चौहान को कानपुर की बाल साहित्य परिषद ने सम्मानित किया।

समारोह के आरंभ में बालहंस द्वारा बालकवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, इसमें अड़तीस बच्चों ने अपनी रचनाएं सुनाईं। इनमें से दस बच्चों को बालहंस द्वारा पुरस्कार भी दिए गए। समारोह में अन्य लोगों के अलावा राजस्थान पत्रिका के सर्वश्री कपूरचंद कुलिश, गुलाब कोठारी, बालहंस के सम्पादक अनंत कुशवाहा, भारतीय बाल कल्याण संस्थान के डॉ. राष्ट्रबन्धु, डॉ. श्रीप्रसाद, सिसु संगमेश, चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक', रामवचन सिंह 'आनंद' मौजूद थे। □□

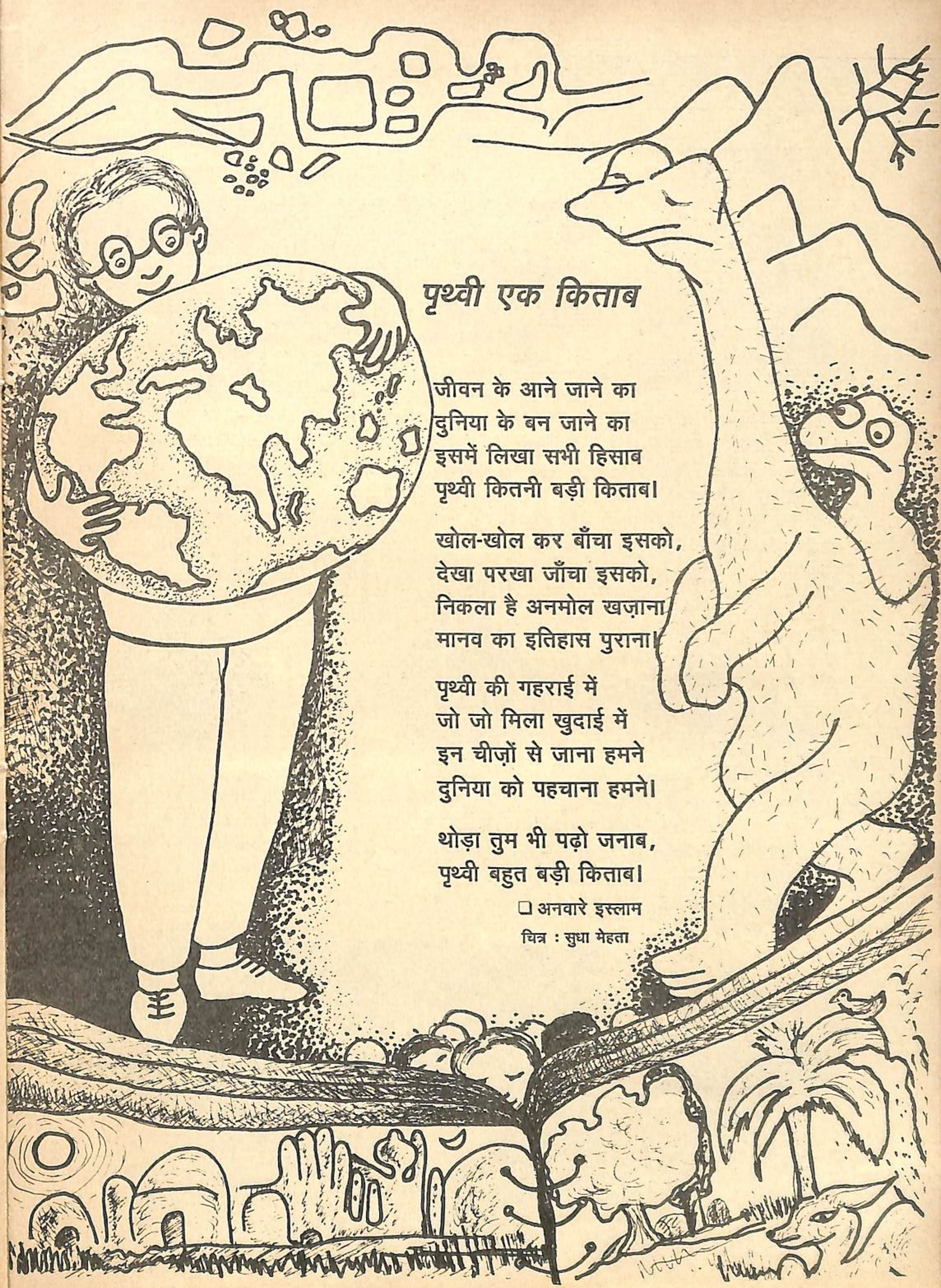

पृथ्वी एक किताब

जीवन के आने जाने का
दुनिया के बन जाने का
इसमें लिखा सभी हिसाब
पृथ्वी कितनी बड़ी किताब।

खोल-खोल कर बाँचा इसको,
देखा परखा जाँचा इसको,
निकला है अनमोल खज़ाना
मानव का इतिहास पुराना।

पृथ्वी की गहराई में
जो जो मिला खुदाई में
इन चीज़ों से जाना हमने
दुनिया को पहचाना हमने।

थोड़ा तुम भी पढ़ो जनाब,
पृथ्वी बहुत बड़ी किताब।

❑ अनवारे इस्लाम

चित्र : सुधा मेहता

सारस

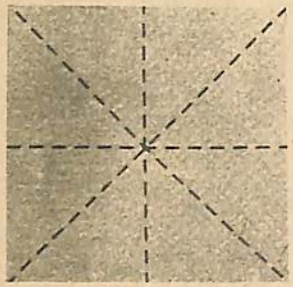

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से कागज़ को मोड़कर निशान बना लो और फिर उसे खोलो। कागज़ को किसी एक कर्ण रेखा पर से मोड़ो। एक त्रिभुजाकार आकृति मिलेगी।

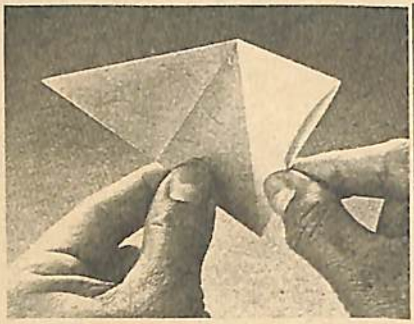

2. त्रिभुज को ठीक बीच से दो हिस्सों में बांटती हुई एक रेखा मिलेगी। त्रिभुज के दाहिने हिस्से को इस रेखा पर से मोड़ते हुए ऊपर उठाओ।

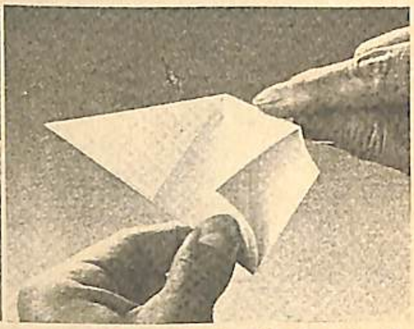

3. उठे हुए हिस्से को बीच में से खोलो। और ऊपर का सिरा नीचे दबाओ ताकि एक वर्ग बन जाए।

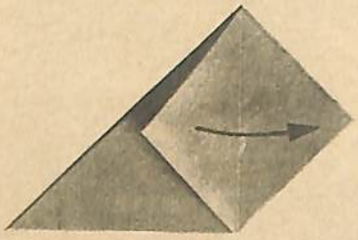

4. वर्ग पर पहले से ही कर्ण बना होगा। वर्ग का बाईं ओर वाला हिस्सा कर्ण पर से मोड़कर दाईं ओर ले जाओ। त्रिभुज के बाएं हिस्से पर भी चित्र 2 से 4 तक की क्रिया दोहराओ।

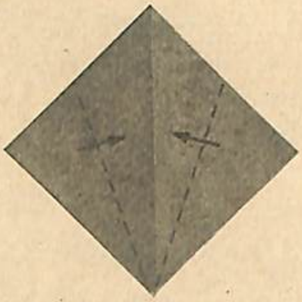

5. अब टूटी हुई रेखाओं पर से ऊपर की सतह के बाएं और दाहिने हिस्सों को तीर की दिशा में मोड़ो।

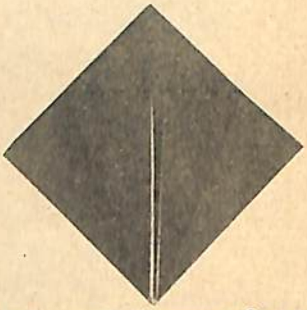

6. ऐसे। आकृति में ऊपर की तरफ़ जो छोटा त्रिभुज बचता है उसे भी टूटी रेखाओं पर अपनी ओर मोड़ो।

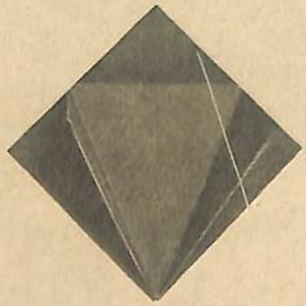

7. अब चित्र 5-6 में बने तीनों मोड़ खोल लो।

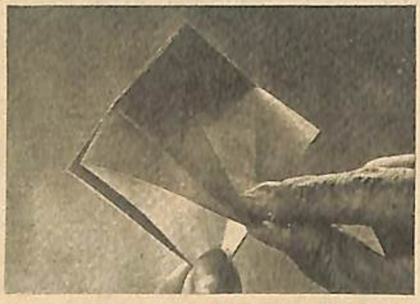

8. अब ऊपर की सतह के निचले सिरे को पकड़कर ऊपर की तरफ धीरे-धीरे उठाओ।

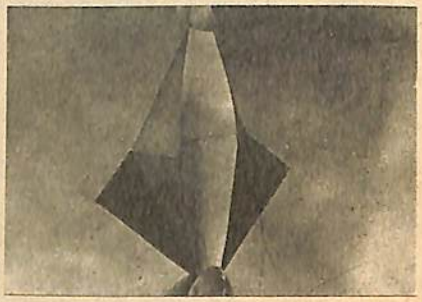

9. इस तरह।

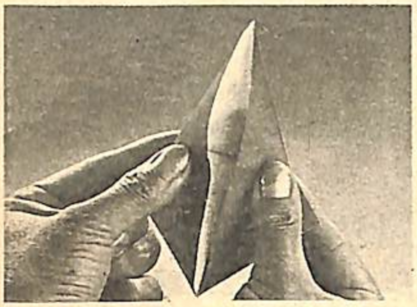

10. और दाईं व बाईं तरफ़ की फूली हुई सतहों को दबाकर चपटा कर दो।

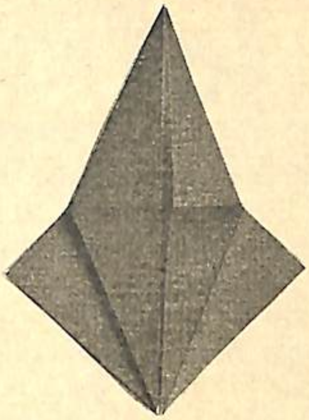

11. मोड़ों को पक्का कर लो और आकृति को पलटकर फिर वही क्रिया (चित्र 5 से 11) दोहराओ।

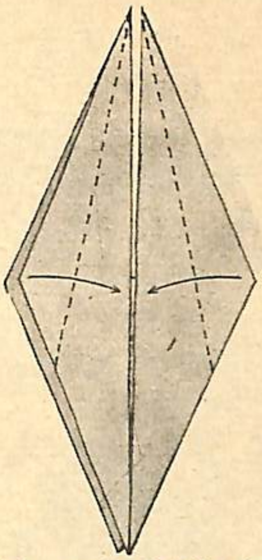

12. ऐसी आकृति मिलेगी। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से ऊपरी सतहों को तीर की दिशा में मोड़ लो। फिर आकृति को पलटकर उसी क्रिया को दोहराओ।

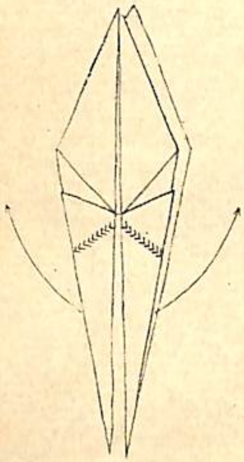

13. अब तुम्हारे पास ऐसी आकृति है। अब इस चित्र में छोटे-छोटे तीरों की रेखा दिखाई दे रही हैं। इन रेखाओं पर से नीचे के हिस्से को मोड़ते हुए तीर की दिशा में ऊपर लाना है।

इस मोड़ को अंगूठे से दबा कर पक्का करलो और वापस खोल लो। अब नीचे के हिस्से को निशान पर से अन्दर की तरफ़ मोड़ते हुए ऊपर ले जाओ।

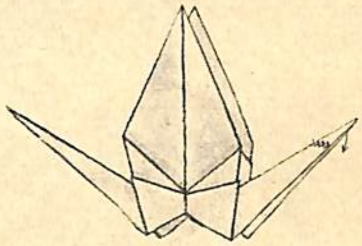

14. इस तरह की आकृति मिलेगी। इसमें एक तरफ़ गर्दन और दूसरी तरफ़ को पूंछ बनेगी। जिस तरफ़ गर्दन बनाना हो उसी तरफ़ के हिस्से को चित्र-13 की तरह मोड़ लो।

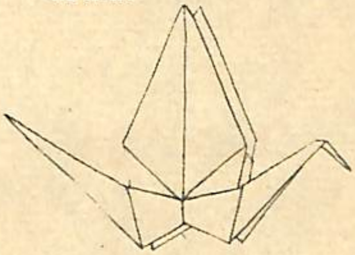

15. तुम्हारे सारस की गर्दन, चोंच और पूंछ तैयार हो गई। अब बीच के उठे हुए हिस्सों से पंख बनाने हैं। इसके लिए उन हिस्सों को दोनों हाथों से पकड़ कर थोड़ा चौड़ा कर लो।

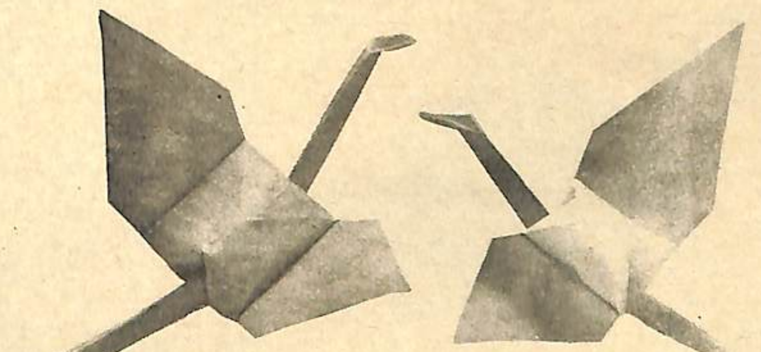

16. ऐसे। दिखने लगे न तुम्हारे सारस के पंख! तो लो, तैयार हो गया तुम्हारा सारस।

बिंदु
• साहू
तुम खड़ी खड़ी क्या सोच रही हो?
मैं इस गठरी के साथ एक प्रयोग कर रही हूं और किसी सहयोगी की तलाश में ताकि मेरी सफलता का आधा श्रेय उसे भी जाए।
क्या तुम मुझे अपना सहयोगी पसंद करोगी।
जरूर। तो अब प्रयोग प्रारंभ करते हैं
अपने सिर पर यह गठरी उठा लो, फिर धीरे धीरे चलो। थक जाओ तो गठरी नीचे रख दो।
मैं तुम्हारे कदमों की संख्या गिनती हूं। एक.. दो... तीन.. चार...
बस यहीं रुक जाओ। मैं अपने प्रयोग में पूरी तरह सफल हूं और इसका आधा श्रेय तुमको जाता है। धन्यवाद!
आखिर तुम्हारा वह प्रयोग क्या था?
इस भारी गठरी को बिना पारिश्रमिक के मैं अपने घर तक लाना चाहती थी, जबकि मैं बहुत थक चुकी थी।

मिलाना छाँटना

उद्देश्य

वर्गीकरण और समूह बनाने की क्षमताओं को विकसित करना।

सामग्री

बच्चों के परिवेश में ज़्यादा मात्रा में उपलब्ध वस्तुएँ जैसे पत्थर, बीज, पत्तियाँ, फल, फूल, टहनियाँ इत्यादि।

बच्चों की संख्या

पूरी कक्षा इस खेल में भाग ले सकती है।

बच्चे अपने आसपास के परिवेश से कोई वस्तु काफ़ी मात्रा में इकट्ठी करके लाएँ। अब हर बच्चा या दो तीन बच्चों की टोली में, इन वस्तुओं को किसी आधार पर छाँटकर समूह बनाएं। ऐसे कुछ आधार यहाँ दिए गए हैं :

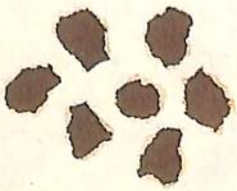

छोटे पत्थर

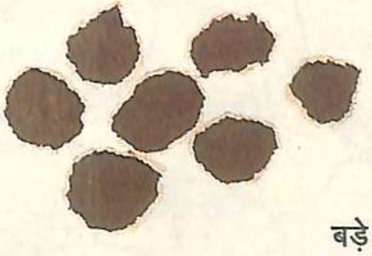

बड़े पत्थर

बड़े बीज

छोटे बीज

छोटी पत्तियाँ

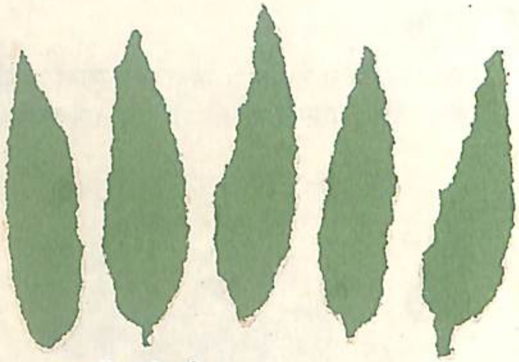

लम्बी पत्तियाँ

नुकीली पत्तियाँ

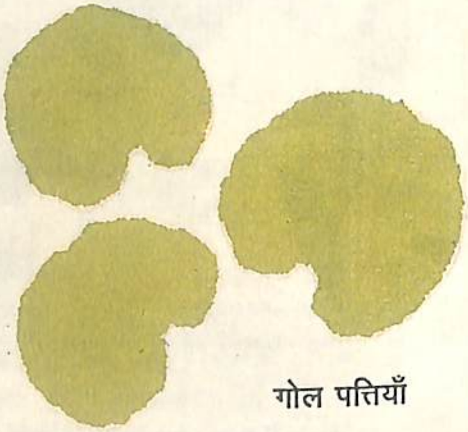

गोल पत्तियाँ

जब बच्चे वस्तुओं के समूह बना रहे हों, तब शिक्षकों को, बच्चों के मन में जो आधार है उसे समझने का प्रयास करना चाहिए। उनको सहयोग देना चाहिए पर ज़्यादा नहीं। उन्हें अपने आधारों को बच्चों पर थोपना नहीं चाहिए। टोलियों में, वस्तुओं की विशेषताओं को लेकर उत्पन्न मतभेदों को सुलझाने में मदद करना चाहिए।

❑ दीप्ति वैद्य

इंडस्ट्रियल डिज़ाइन सेंटर, बम्बई

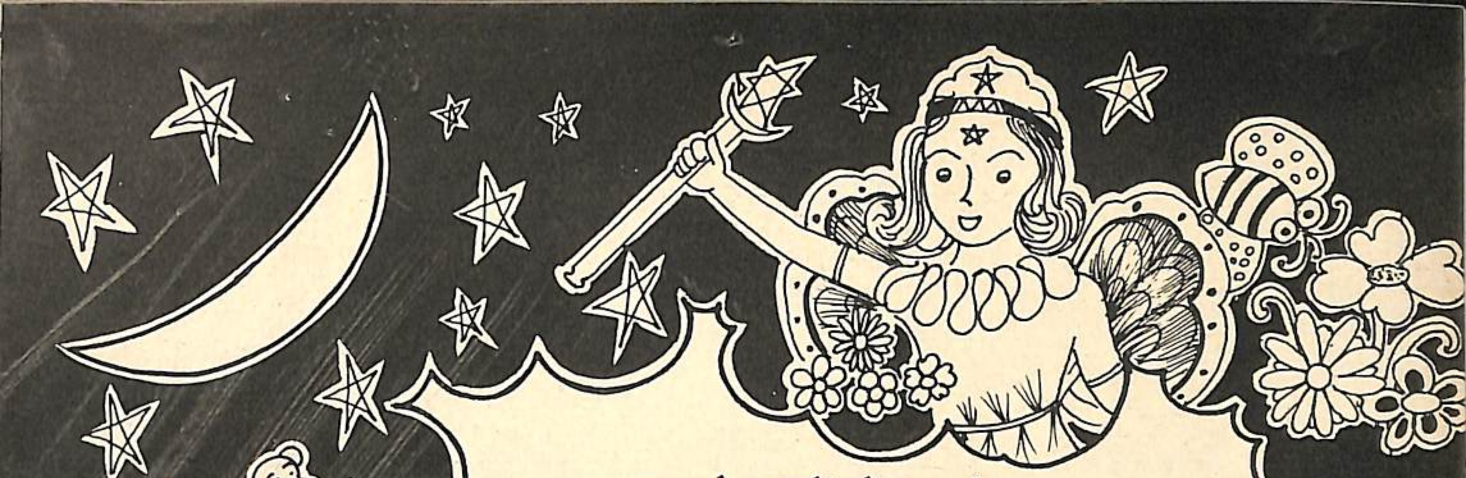

सपने क्यों हैं आते!

मम्मी सपने क्यों हैं आते
कभी रूलाते कभी हँसाते

बूढ़ी दादी घर जब आती
ढेर खिलौने भर कर लाती

कुछ खो जाते, कुछ रह जाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते

परियों के जब देश घूमता
रंग बिरंगे फूल-चूमता

भँवरे मुझे देख मुस्काते
मम्मी सपने क्यों हैं आते

चाँद सितारे जुगनू सारे
देखो लगते कितने प्यारे

यह सब मेरा मन बहलाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते

सपनों का वह देश सुहाना
मम्मी सुनो, मुझे भी जाना

मधुर मिलन का गीत सुनाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते।

❑ कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
चित्र : हिमांशु

समुद्र में जीवन

किनारे से काफी दूर जहाँ समुद्र का पानी ठहरा हुआ होता है, एक लड़का अपनी छोटी-सी नाव में बैठा, घबराया-सा, जाल में आ फँसी उस अजीब-सी लाल-लाल चीज़ को देख रहा था, 'मैंने अब तक ऐसी कोई चीज़ समुद्र में से निकलते नहीं देखी। अच्चन (पिता जी) ने भी कभी कुछ नहीं बताया इसके बारे में..'

बात यूँ थी कि यह लड़का, कुंजुकुट्टी जिसका नाम है, समुद्र में झींगा-मछली पकड़ने निकला था। वह पहले चार-पाँच बार जाल डाल चुका था और काफी सारी मछलियाँ पकड़ भी चुका था। 'बस आख़िरी बार...' सोचकर उसने जाल डाला और धीरे-धीरे ऊपर खींचने लगा। 'काफ़ी भारी है, ज़रूर कोई बड़ी मछली होगी' कुंजुकुट्टी अभी सोच ही रहा था कि जाल ऊपर आ गया। 'बाप रे!' जाल में फँसी ढेर-सी मछलियों के बीच उस अजीब लाल-लाल, गोल-गोल काँटेदार चीज़ को देखकर जाल उसके हाथों से छूटते-छूटते बचा था। घबराकर उसने जाल को जल्दी से उस अजीब चीज़ समेत नाव में एक तरफ को पटका और खुद दूसरी तरफ घुटने पर कोहनी रखकर हथेली पर ठोढ़ी टिकाकर बैठ गया और सोचने लगा।

सोचते-सोचते काफ़ी देर हो गई लेकिन कुंजुकुट्टी की समझ में ही नहीं आया कि यह आख़िर है क्या। और वह इसका करे क्या? पहले मन हुआ कि वापस समुद्र में

▲ तितली २

डाल दे। लेकिन 'पता तो करना चाहिए कि यह है क्या?' सोचकर उसने धीरे-धीरे हिम्मत करके जाल के पास पहुँचकर उस चीज़ को छूने के लिए हाथ बढ़ाया.... 'अरे! यह तो हिल-डुल भी रही है.... यानी कोई जीवित प्राणी है। शायद कोई मछली.....।'

कुंजुकुट्टी से कुछ दूर दो-तीन नावें और भी थीं जिनमें उसकी ही उम्र के गाँव के कुछ और लड़के भी मछलियाँ पकड़ रहे थे। उनमें से किसी ने उसे आवाज़ दी "कुंजु, हम वापस जा रहे हैं, घर नहीं चलना है क्या आज?"

कुंजुकुट्टी केरल में समुद्र के किनारे बसे मछुआरों के एक छोटे से गाँव अम्बलपुलाई में रहता है। उसकी उम्र यही कोई पन्द्रह-सोलह वर्ष होगी। कुंजुकुट्टी वैसे तो अपने पिता के साथ बहुत बार समुद्र में गया है पर अभी कुछ दिनों से उसने अपनी नाव लेकर अपने बराबर के लड़कों के साथ अकेले ही समुद्र में जाना शुरू किया था। कुंजुकुट्टी को समुद्र में जाना हमेशा अच्छा लगता रहा है। लेकिन जब वह पहली बार अकेले नाव लेकर गया था और समुद्र में जाल डाला था तब उसे बहुत घबराहट हुई थी। फिर धीरे-धीरे उसका पुराना मज़ा लौट आया। लेकिन आज उसकी हालत कुछ अजीब-सी थी। अपने दोस्तों की आवाज़ से कुंजु का ध्यान टूट गया। "हाँ, हाँ, आता हूँ।" कहकर उसने अपनी पतवार उठाई और तेज़ी से नाव खेता हुआ किनारे की ओर चल दिया। जब वह किनारे पर पहुँचा तब उसके दोस्त अपने-अपने जाल समेटकर चलने ही वाले थे। कुंजु ने ज़ोर की आवाज़ लगाई, "साजी, भासी, गुण्डु देखो, यह क्या है?"

"क्या है? क्या है?" करते हुए सब उसके आसपास आ जुटे।

"यह क्या कोई समुद्री फूल है?"

"अरे नहीं गुण्डु, यह तो समुद्री टमाटर है।"

"क्यों, क्या तुमने कभी समुद्री कुमुदिनी के बारे में नहीं सुना? मेरे ख़्याल से यह वही है।"

सब अपना-अपना अनुमान लगा रहे थे लेकिन कोई नहीं जानता था कि वह है क्या? आख़िर सब अपने-अपने जाल वग़ैरह समेट कर घर की ओर चल दिए। कुंजुकुट्टी अपनी उस नई चीज़ के बारे में सोचता-सोचता घर पहुँचा। आज पकड़ी हुई मछलियाँ अम्मा के सामने रखीं और उस चीज़ को लेकर अपने अप्पुपन के पास पहुँचा। उसके अप्पुपन यानी दादा जी बाहर बैठे अपना जाल ठीक कर रहे थे। "अप्पुपन, अप्पुपन, यह देखो, यह क्या है? जब मैंने आख़िरी बार जाल समुद्र में डाला तो यह उसमें फँसा था।"

कुंजुकुट्टी के अप्पुपन ने उस 'चीज़' को उलट-पलटकर देखा और हौले-हौले मुस्कुराते हुए बोले "अरे, कुंजु यह तो समुद्र के तल में रहने वाली सीपी है पर यह तेरे जाल में कहाँ से आ गई है?"

आरी मछली

"अप्पुपन मुझे इसके बारे में और बताओ न!"

"इससे ज्यादा तो इसके बारे में मैं जानता नहीं फिर तुझे कैसे बताऊँ।" कहकर अप्पुपन अपने जाल में उलझ गए।

कुंजुकुट्टी का तो मुँह एकदम लटक गया। उसके मन में ढेरों प्रश्न थे - 'अब किससे पूछूँ?' "कुंजु यहाँ क्या कर रहे हो? चलो न खेलते हैं।" उसकी बहन एलिअम्मा ने उसे हिलाया, "अरे तुम्हें क्या हुआ? तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है?"

एलिअम्मा की बात सुनकर अप्पुपन का ध्यान कुंजु की ओर गया। अपना जाल छोड़कर कुंजु से बोले, "तुम इस सीपी के बारे में और जानना चाहते हो न?" कुंजु ने सिर हिलाया, "तो ठीक है, मैं तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति के पास ले चलूँगा जो इसके बारे में बहुत कुछ जानता है। चलोगे?"

"हाँ चलूँगा!"

"अपुप्पन मैं भी चलूंगी।" एलिअम्मा ने जोड़ा।

"ठीक है दोनों चलना, जाओ अभी अपनी अम्मा के काम में हाथ बटाओ। कल सुबह हम तीनों शहर चलेंगे।"

कुंजुकुट्टी के अप्पुपन मुंजुकुट्टी एक अच्छे गोताखोर थे। एक बार शहर से कुछ लोग आए थे, उनके गाँव में, समुद्र के अन्दर के जीव-जन्तुओं के बारे में खोजबीन करने। तब अप्पुपन अभी जितने बूढ़े नहीं थे, तभी वे उन खोजबीन करने वालों के साथ समुद्र में खूब अन्दर तक गए भी थे। उन लोगों को कुंजु के अप्पुपन जैसे किसी गोताखोर की तलाश भी थी। उसी दौरान अप्पुपन की जान-पहचान अलेप्पी में रहने वाले श्रीमूर्ति से हुई। श्रीमूर्ति समुद्री जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के बारे में ही अध्ययन कर रहे थे। आज जब अप्पुपन ने कुंजु की जिज्ञासा देखी तो उन्हें श्रीमूर्ति की ही याद आई। श्रीमूर्ति ने उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण और पता तो दिया ही था। अब मौका लगा तो उन्होंने दोनों बच्चों को लेकर शहर जाने का फ़ैसला कर ही लिया।

एलि और कुंजु सुबह से ही शहर जाने की तैयारी में लगे थे। कुंजु ने अपनी उस सीपी को एक झोले में रख लिया था और तीनों बस में बैठकर शहर की ओर चल दिए। श्रीमूर्ति के घर पहुँचकर उन्होंने देखा कि वे अपने टेबिल पर किताबें फैलाए कुछ पढ़ने में मसरूफ़ हैं। अप्पुपन को देखते ही श्रीमूर्ति बोले, "अरे मुंजुकुट्टी, आओ आओ। आज अचानक इतने दिनों बाद तुम्हें देखकर बहुत अच्छा लग रहा है।" कहते हुए श्रीमूर्ति उन तीनों को घर के अन्दर ले गए। इत्मीनान से बैठकर थोड़ी बातचीत के बाद उन्हें अप्पुपन ने उस सीपी के बारे में बताया।

कुंजु तो इसी का इन्तज़ार कर रहा था। उसने फ़ौरन अपने झोले में से वो सीपी निकालकर श्रीमूर्ति को दिखाई। श्रीमूर्ति ने उस सीपी को उलट-पलटकर देखा फिर

चित्र 1 ▶

बोले, "बच्चो इस सीपी ने तुम्हें आश्चर्य में डाल दिया है, है न? भई आश्चर्य की बात तो है भी, क्योंकि यह और इस तरह के कई और आश्चर्यचकित कर देने वाले जीव-जन्तु, पेड़-पौधे समुद्र के अन्दर बहुत मिलते हैं। उनको देखने का ज़्यादा मज़ा तो तभी आ सकता है जब कि समुद्र में घूम-घूमकर देखा जाए। लेकिन उसके लिए अच्छा गोताखोर होना ज़रूरी है, तुम्हारे अप्पुपन की तरह। ख़ैर गोताखोरी तो तुम अपने अप्पुपन से सीख लेना, अभी मैं तुम्हें एक दूसरे समुद्र में ले चलता हूँ।"

श्रीमूर्ति उन तीनों को लेकर एक बड़े-से कमरे में पहुँचे। उस कमरे की चारों दीवारों पर किताबें ही किताबें थीं। उन्होंने एक अलमारी खोली और उसमें से चुनकर एक किताब निकाली। उस किताब में से खोजकर श्रीमूर्ति ने एक चित्र निकालकर कुंजु को दिखाया। "अरे यह तो इसी सीपी का चित्र है?" कुंजु चहक उठा।

"हाँ, यह तुम्हारी उसी सीपी का चित्र है।" श्रीमूर्ति टेबिल के एक ओर बैठ गए। बाक़ी तीनों भी उसी टेबिल के इर्द-गिर्द बैठ गए। "और समुद्र में सिर्फ़ यही नहीं, हज़ारों-हज़ार तरह के जीव होते हैं। यह जो जीव है इसे कहते हैं......."

श्रीमूर्ति की किताब क्या खुली जैसे एक नई दुनिया का दरवाज़ा खुल गया। रंग-बिरंगी सपनों-जैसी दुनिया। हमारी अपनी दुनिया से भी कहीं ज़्यादा सुन्दर.......। कुंजु और एलि देर तक इस दुनिया में खोए रहे।

गाँव लौटते हुए कुंजु और एलिअम्मा दोनों एकदम चुप थे। उनकी आँखों में अभी भी समुद्र के भीतर की ही दुनिया घूम रही थी। अप्पुपन ने उन्हें चुप देखकर पूछ ही लिया, "क्या बात है बच्चो, क्या सोच रहे हो?

"अप्पुपन", कुंजु ने जवाब दिया, "मैं भी आपकी तरह गोताखोर बनना चाहता हूँ। आप मुझे गोता लगाना सिखाएंगे?"

"अच्छा तो यह बात है।" अप्पुपन हँस पड़े, "लेकिन बहुत मेहनत करनी पड़ेगी!"

"मैं करुंगा।"

"अप्पुपन मैं भी।" एलिअम्मा बोल पड़ी।

"तो ठीक है कल से ही शुरू करेंगे। तुम्हें भी सिखाऊंगा और एलिअम्मा को भी। क्यों ठीक है न?" ज़ाहिर है दोनों यही चाहते भी थे।

❑ **कविता सुरेश**

श्रीमूर्ति की किताबों में से कुछ चित्र हम यहाँ छाप रहे हैं। तुम भी देखो और बताना कैसे लगे। ये चित्र इन किताबों से साभार लिए गए हैं- नैशनल ज्योग्राफ़िक की वर्ल्ड एक्सप्लोरर सीरीज़, टाइम लाइफ़ सीरीज़, द न्यू बुक ऑफ़ पॉपुलर साइंस, द एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ एन्वायरनमेंट और कोस्ट्स ऑफ़ इण्डिया।

टॉरपीडो ▲

(ऊपर) एक समुद्री एनीमोन मछली का शिकार करता हुआ। मछली, एनीमोन के स्पर्शकों के संपर्क में आते ही धराशायी हो जाती है। (बीच में) और फिर एनीमोन स्पर्शकों की मदद से मछली को निगलना शुरू करता है। (नीचे) मछली पूरी निगल ली गई। नतीजन फूला हुआ एनीमोन।

एक ट्यूब एनीमोन और उसके पास आती हुई, तेज़ गति वाली एक कटलेस (तलवार) मछली।

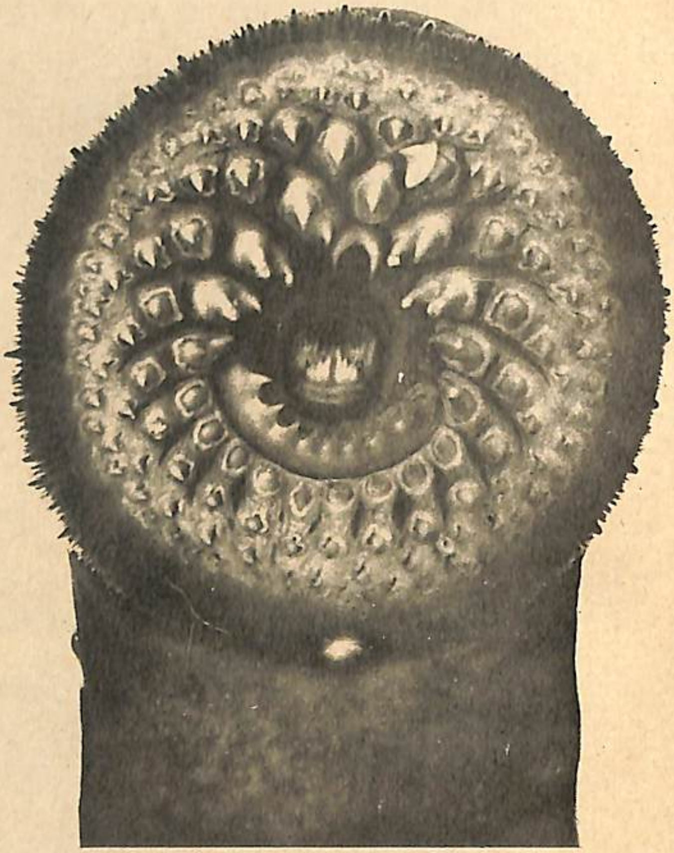

समुद्री जीव 'लैम्प्रे' का मुँह। इसमें कोई 125 पैने दाँत हैं जिनकी सहायता से यह मछलियों का खून चूसता है। मुँह के अन्दर कुछ ग्रंथियां भी होती हैं, जिनसे एक ऐसा द्रव्य रिसता रहता है, जो मछली के खून को जमने नहीं देता।

दक्षिण पश्चिम एशिया का एक बहुत अधिक ज़हरीला समुद्री सांप। उसकी बनावट पर ध्यान दो। छोटा सिर, भारी शरीर और चपटी पूंछ।

अब मिलो एक ऐसे समुद्री प्राणी से जिनमें बच्चे के जन्म के बाद उनकी परवरिश में नर भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह है समुद्री घोड़ा। इनमें नर बच्चे को अपने पेट में बनी थैली में रखता है।

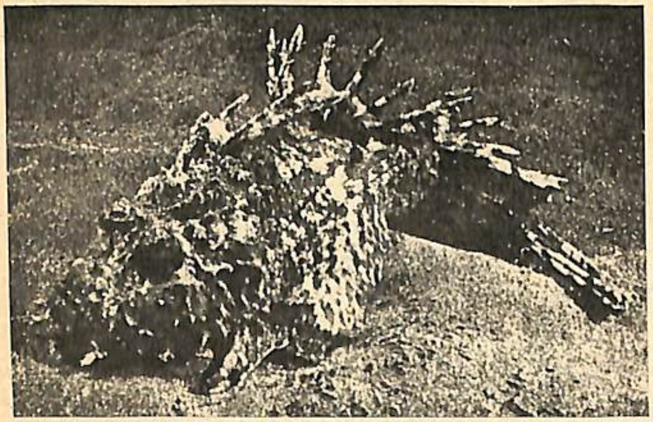

देखने में भद्दी और डरावनी, लेकिन रंग-बिरंगी यह बिच्छू मछली शिकार के इंतज़ार में बैठी है। यह समुद्र में पाए जाने वाले ख़तरनाक जीवों में से एक है। इसके शरीर पर दिखाई दे रहे काँटों में ज़हर होता है।

समुद्री जीव ट्यूनीकेट का एक झुण्ड। ये हमेशा झुण्ड में ही रहते हैं। हर ट्यूनीकेट में ऊपर की ओर दो खुले मुँह खाना खाने और पानी पीने के लिए होते हैं। इसी तरह नीचे की ओर छेद होते हैं जिनसे बेकार पदार्थ निकलते हैं।

परी शार्क ▲

अग्नि-प्रवाल। पीली आग-सा दिखने वाले इस प्रवाल का डंक बहुत दर्दकारक होता है। यह अधिक से अधिक छह इंच चौड़ा होता है।

यह दीपावली या बड़े दिन की सजावट नहीं है। ये हैं एलसियोनेरियन प्रवाल। और इसकी शाखों पर सफ़ेद झालर की तरह चिपके हैं ढेर सारे समुद्री जीव। ये जीव समुद्र से पानी सोखकर प्रवाल की शाखों को मजबूत बनाए रखते हैं। लेकिन जैसे ही कोई ख़तरा दिखाई देता है, ये पानी छोड़कर निढाल हो जाते हैं और ख़तरा टलते ही फिर से फूलकर कुप्पा।

समुद्र में पानी की सतह से सिर्फ दस फुट नीचे उगने वाले पौधों में से एक। ये पौधे पानी के अन्दर पहुंचने वाली प्रकाश की थोड़ी मात्रा से ही अपना भोजन बना लेते हैं।

यह है एथोलिड न्यूडीब्रान्चेज़ नाम का एक समुद्री घोंघा। इसकी औसत लम्बाई 3.8 से.मी. होती है। इस चमकीले घोंघे के पंख वाले स्पर्शक होते हैं जिन्हें सिरेटा कहते हैं। सिरेटा का उपयोग खाना ढूंढने और सांस लेने में होता है।

गर्म इलाक़ों में, समुद्र में गर्मी के मौसम में, कई समुद्री पौधे पनपते हैं। यह प्रवालीय घास भी इनमें से एक है। कैल्शियम की अधिकता के कारण इसकी शाखाएँ सख्त होती हैं।

◀ पीला सर्जन

समुद्र के तट पर मिलने वाला एक घोंघा

एक समुद्री प्रवाल पर कई सारे छोटे-छोटे अन्य जीव चिपके हुए हैं।

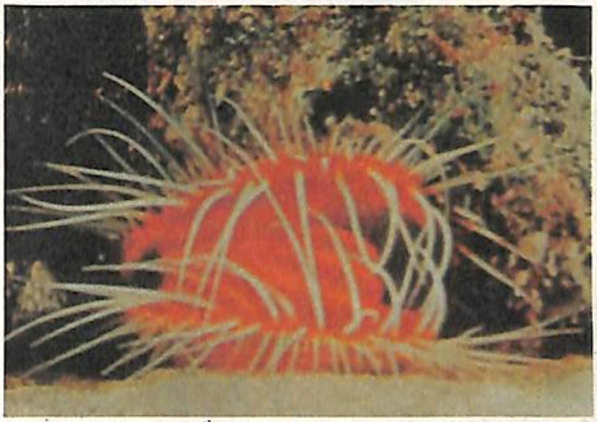

यह है कुंजु का लाल टमाटर।

इन्हें कहते हैं सुस्त समुद्री घोंघे। देखने में भले ही सुन्दर हैं।

समुद्र के नीचे आठ अलग-अलग तरह के प्रवालों के झुण्ड।

(बाएँ) यह एक तरह का घोंघा है। इसका भोजन है पत्थरों से चिपकी काई। यह लगभग एक इंच लम्बा होता है।

(नीचे-दाएँ) यह न्यूडी ब्रांच कहा जाने वाला एक समुद्री घोंघा है जो एक प्रवाल से चिपका है। एक फुट लम्बा यह घोंघा अपने से छोटे जीवों का शिकार करता है। अपने चटख रंग और लिसलिसे शरीर के कारण यह खुद बचा रहता है।

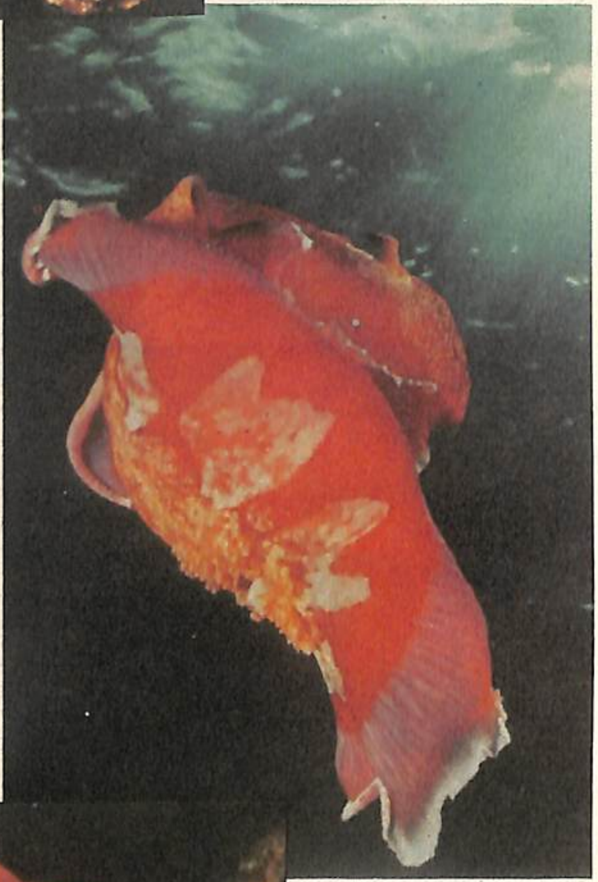

डिपुलमेरिस। बहुत-से छोटे-छोटे जलचरों को अपने शरीर पर आश्रय देने वाली जैली मछली।

यह गुलाब की पंखुड़ियों का गुच्छा नहीं बल्कि न्यूडी ब्रांच के बहुत से अण्डों का गुच्छा है।

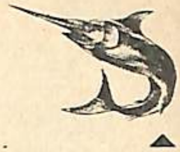

सीपी में दोनों ओर कवच होते हैं। दोनों में से एक-को अलग कर दिया जाए तो कुछ ऐसी रचना दिखाई देगी। कई अन्य सीपियों के बीच एक खुली सीपी देखो।

घोंघे द्विलिंगी होते हैं। इस चित्र में दो घोंघे प्रजनन की प्रक्रिया में।

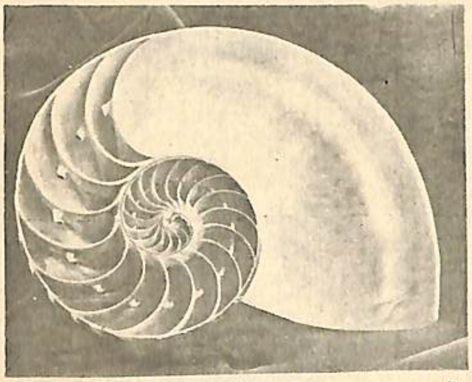

खानेनुमा सीप की आड़ी काट। इस तरह के जीव बहुत पुराने समय से समुद्र में रहते आए हैं। किन्तु इनकी बहुत कम जातियाँ आज जीवित हैं।

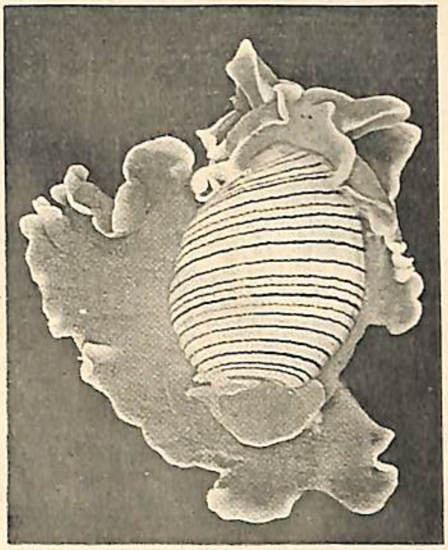

इस शंख का नाम गुलाब की पंखुडी है। जो पतला-सा हिस्सा चारों तरफ फैला है उसी से रिसे हुए द्रव्य से शंख बनता है।

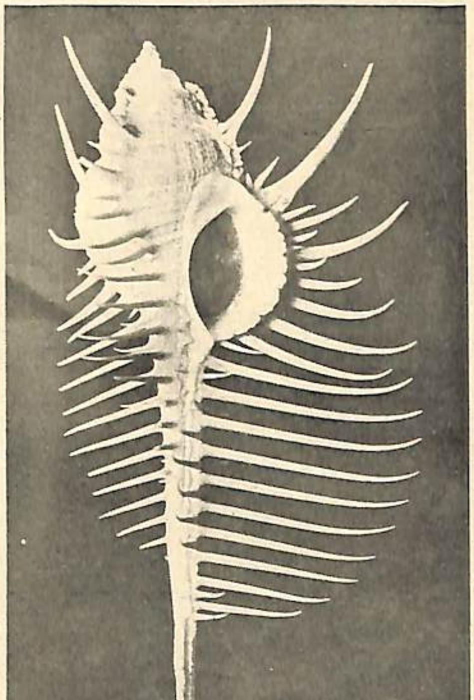

हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर में पाए जाने वाले एक समुद्री जीव का आवरण -शंख-वीनस कोम्ब म्यूरेक्स।

स्टिंग रे ▲

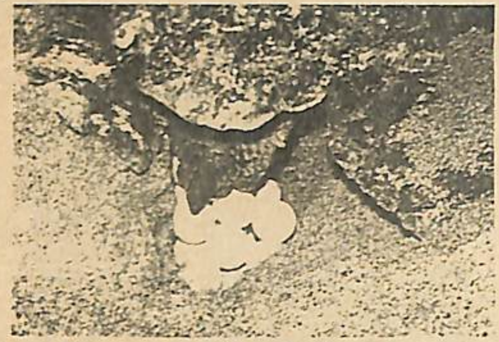

समुद्री कछुए कुनकुने पानी में रहना पसन्द करते हैं। मादा किनारे पर आकर, रेत में गड्ढा खोदकर उसमें अण्डे देती है। बिल्कुल सफ़ेद, गेंद से दिखने वाले अण्डे। दो माह बाद हर अण्डे में से लगभग तुम्हारी हथेली के बराबर का नन्हा कछुआ निकलता है और बढ़ जाता है अथाह समुद्र में।

(दाएँ) जाल में फंसा यह कछुआ निकारागुआ के तट के पास का है। खाने के अलावा ज़ेवर, चमड़ा आदि के लिए मारे जाने के कारण कम होता जा रहा है।

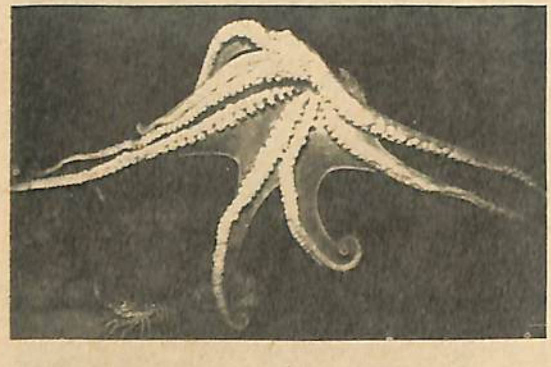

(बाएँ) सिफैलोपोड आक्टोपस। इस पर कवच नहीं होता। आठ बड़े स्पर्शक (भुजा) होते हैं, जिनमें नीचे चूसने के लिए गद्दे होते हैं।

(बाएँ-नीचे) शिकार की तलाश में एक बड़ा आक्टोपस अपने आसपास का जायज़ा ले रहा है।

(दाएँ-नीचे) अण्डों की झिल्ली से झाँकती नन्हें आक्टोपसों की टोली। अण्डे फूटने का इंतजार है उनको।

टेरासिस ◀

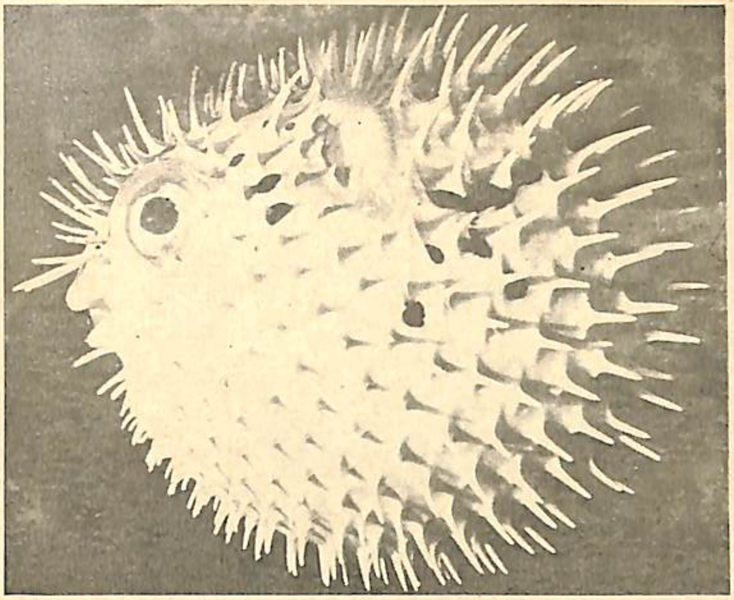

साही मछली। ख़तरे के समय या डर जाने पर साही मछली ढेर-सी हवा या पानी गटककर गुब्बारे-सी फूल जाती है। उसके तीखे काँटे जो सामान्य तौर पर शरीर से चिपके रहते हैं, आक्रमण या बचाव के समय खड़े हो जाते हैं।

फीके रंग की सरकण्डों जैसी दिखने वाली ये हैं पाइप मछलियाँ। ये समुद्री घोड़े के परिवार की सदस्य हैं।

(नीचे) ढलती दोपहर में, सूरज की किरणों के कारण समुद्र में पानी की सतह शीशे के घर की तरह दिखती है। ऐसे ही समय में ये टर्की मछलियाँ शिकार की तलाश में हैं।

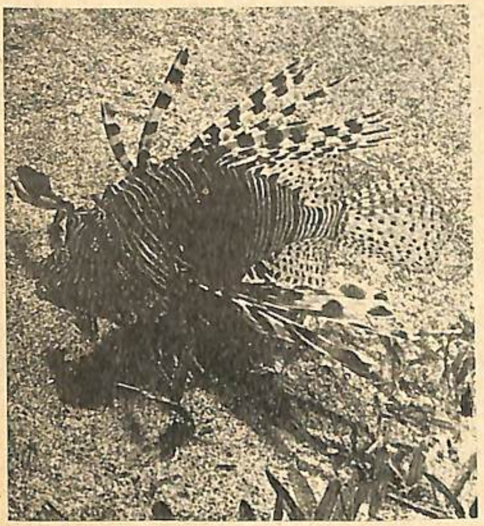

समुद्र में प्रवाल भित्ति के गरम माहौल में प्रजनन की प्रक्रिया में साही मछलियों का जोड़ा।

(ऊपर) समुद्री गाय। वज़न लगभग 450 किलोग्राम। लम्बाई लगभग तीन मीटर। समुद्री गाय समुद्री पेड़-पौधों से ही अपना भोजन लेती है।

(नीचे) बोतलनुमा नाक वाली डॉलफिन खाने के इंतजार में आशा भरी निगाहों से ताक रही हैं। जब ये छलांगें भरती हैं तो लगभग चार मीटर ऊपर तक उठ जाती हैं।

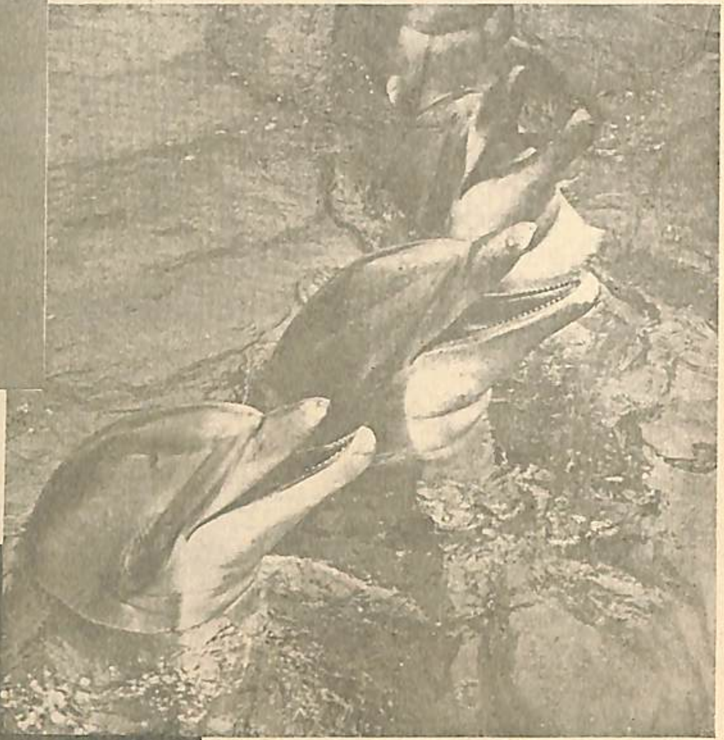

(बाएँ) अपने रंग-रूप के कारण तेंदुआ शार्क कहलाती है। यह लगभग दो मीटर लम्बी होती है। क्रूर हाव-भाव और डरावनी शक्ल के बावजूद यह हानिरहित मछली है।

(नीचे-दाएँ) ग्रे व्हेल भोजन की तलाश में।

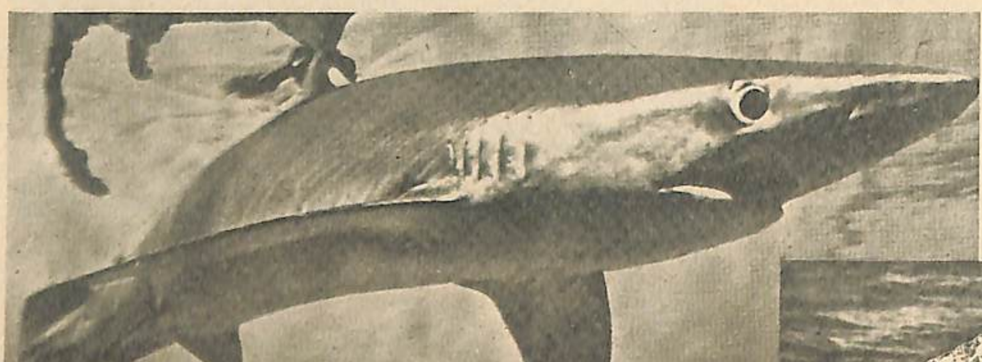

यह नीली शार्क मछली है जो गहरे समुद्र में रहती है।

नई सदी की दन्तकथा

□ डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

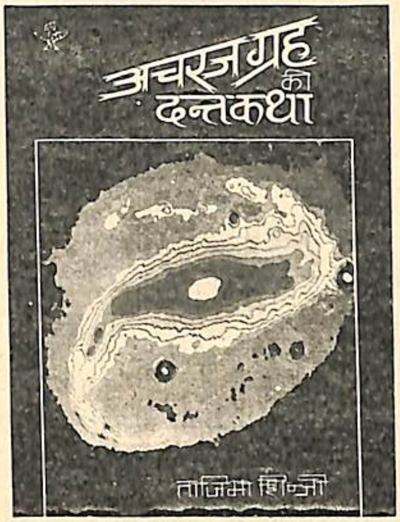

भविष्य की शताब्दी यानी इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने के लिए अब केवल सात वर्ष शेष हैं। आज का विश्व जिन विभीषिकाओं का सामना कर रहा है, उसी के दुष्परिणाम नई सदी के नागरिकों को भोगने होंगे। वे नागरिक, आज के बच्चे हैं। और इसलिए जापानी बालकथाओं के सफल लेखक ताजिमा शिन्ज़ी ने ज़रूरी समझा कि बच्चों को सच्चाइयाँ बताई जाएँ, जिनका वे सामना करने वाले हैं। ताजिमा शिन्ज़ी की पाँच बालकथाओं के संग्रह का हिन्दी अनुवाद अभी-अभी 'अचरज ग्रह की दंतकथा' के नाम से, साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। इसकी भूमिका में वह लिखते हैं - *'हम तो काग़ज़ की एक नाव में क़ैद मुसाफ़िरों की तरह हैं, जो एक विशाल प्रपात के नीचे असहाय इधर से उधर थपेड़े खाते घूम रही है। हम बड़े–बुज़ुर्ग किस प्रकार अपने बच्चों को, उस महाविपत्ति का अहसास करा सकते हैं, जो उनकी हक़ीक़त बनने वाली है। अगर हम इस विनाश को रोकने में असमर्थ रहे और मानवता की नाव को शान्त जल की ओर न मोड़ पाए तो अगली पीढ़ी को इस कठिनाई को अपने हाथ में लेकर ख़तरे के पार जाने को तैयार रहना होगा।'*

फिर भी, ताजिमा शिन्ज़ी आशावान हैं और उन्होंने अपने बाल-पाठकों का आह्वान किया है- *'बच्चो, उठ खड़े होओ, निष्ठा रखो - मेहनत के लिए तैयार रहो- और सबसे ज़्यादा, एक आशावान एवं उदार हृदय रखो तथा हिम्मत से इक्कीसवीं, सदी का निर्माण करो, जो तुम्हारी ही है।'*

ताजिमा शिन्ज़ी दक्षिण एशियाई क्षेत्र की यूनेस्को शाखा के महानिदेशक हैं। उनकी इन कहानियों का, दक्षिण एशियाई देशों की बत्तीस भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

'कोनकिची होमहिल' पहली कहानी है। कोनकिची नाम है- एक युवा-लोमड़ का, जो अपने लोमड़ जीवन को व्यर्थ समझता है और जिसे मनुष्यों की चमक-दमक भरी, आनंदपूर्ण दुनिया आकर्षित करती है। उसने सुन रखा है कि 'केन-पोन-तान' जादू का इस्तेमाल करने से कोई भी लोमड़ इन्सान बन सकता है। लेकिन वह दुबारा इन्सान से लोमड़ नहीं बन सकता। कोनकिची की माँ उसे समझाती है कि वह यह भूल न करे। लेकिन वह तो इन्सानों की दुनिया की चकाचौंध में खो चुका है। आख़िर वह इन्सान बन जाता है। वह 'माउन्टेन फ़ैशन कम्पनी लिमिटेड' का एक विज्ञापन पढ़ता है और उसके मालिक के पास नौकरी के लिए पहुँच जाता है। वह कम्पनी फ़र के कोट बनाती है। एक दिन वह कम्पनी की फ़ैक्ट्री में गया तो उसने गिलहरी, ख़रगोश, शेर, भालू, आदि अनेक जानवरों की खालें लटकी हुई देखीं। उसके होश उड़ गए। इतने सारे जानवरों की निर्मम हत्या? उसका दिल दुख से भर गया। फिर उसने किसी तरह अपने को समझाया और अपने काम पर लौट आया। सर्दियाँ आने वाली थीं। कम्पनी के मालिक ने कोनकिची से कहा कि हमें बहुत सारे फ़र चाहिए। इसके लिए तुम्हें शिकारियों को लेकर जंगल जाना होगा। वह उसे इसके लिए लालच भी

देता है। आखिर कोनकिची शिकार के लिए जाता है। वहाँ वह रुपहली खाल वाली एक लोमड़ी का शिकार करता है। उस तरह की खाल बड़ी नायाब मानी जाती है। किन्तु जब शिकारी दल उस लोमड़ी को लेकर कोनकिची के पास आया तो कोनकिची उसे देखकर चीख़ पड़ा। वह उसकी अपनी माँ थी। दुख से पागल होकर कोनकिची उसी पहाड़ी की और दौड़ चला जहाँ उसकी माँ रहती थी। 'हाय मैंने यह क्या कर डाला'- उसकी चीख़ से जंगल गूँज उठा। इसके बाद किसी को पता नहीं कि कोनकिची कहाँ गया।

यह कहानी जहाँ मानव द्वारा अपने स्वार्थों के लिए वन्य-पशुओं की बेशुमार हत्या और इस तरह बिगड़ते हुए प्राकृतिक-संतुलन के प्रति चौंकाती है, वहीं यह भी बताती है कि आज का इन्सान कितना स्वार्थी हो गया है और उसके अन्दर कितनी अधिक विनाशकारी प्रवृत्तियाँ जाग उठी हैं। इनसे अच्छा जीवन तो उन जानवरों का है जो प्रकृति से प्रेम करते हैं।

आज विश्व में जिस तरह से 'परमाणु शस्त्रों' की होड़ मची हुई है और सारी दुनिया को प्रदूषित करने वाले तत्वों का निर्माण हो रहा है, उससे लगता है कि आने वाली सदी में अंतरिक्ष के ग्रह भी इस प्रदूषण से बचे नहीं रहेंगे। इसी वैज्ञानिक कल्पना पर आधारित है 'अचरज ग्रह की दंतकथा'। यों अचरज ग्रह के लोग बड़े सुख के दिन बिता रहे थे, फिर भी उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि वे पृथ्वी के लोगों से मिलें। एक दिन अचरज ग्रह पर एक चमकीली चीज़ आकाश से नीचे उतरी। उसे पृथ्वी से भेजा गया उपहार समझकर बड़ी ख़ुशी से स्वीकार किया गया। किंतु उसे जब खोला गया तो उसमें से सफ़ेद-सा पाउडर निकला। उस पाउडर को छूने भर से अचरज ग्रह के लोग मरने लगे। धीरे-धीरे वह पाउडर पूरे अचरज ग्रह में फैलने लगा। चारों तरफ भगदड़ मच गई। लोग अंतरिक्ष यानों पर बैठकर भागने लगे। उन्हें विश्वास हो गया कि अब अचरज ग्रह नष्ट हो जाएगा। किन्तु पृथ्वीवासियों ने हमारी ख़ुशियाँ क्यों छीन लीं? जिस ज़हर को वे पृथ्वी पर नहीं रख सके उसे अचरज ग्रह पर भेजकर उन्होंने हमसे कैसा बदला लिया है? जिन पृथ्वीवासियों के प्रति उनके दिल में प्यार था, वह अब नफ़रत में बदल गया था। कौन जाने अचरज ग्रह के लोगों ने अंतरिक्ष के किस कोने में ठौर लिया होगा।

यह कहानी हमारे उस भविष्य की ओर संकेत करती है जो प्रदूषण के कारण स्वयं पृथ्वीवासियों के लिए एक भयानक ख़तरा बन जाएगा। वह कितना भयावह समय होगा जब हमें अपने औद्योगिक एवं परमाणु कचरे को अंतरिक्ष के पार दूसरे ग्रहों में भेजना होगा। लेकिन उससे पहले हमारी स्थिति कितनी विनाशकारी हो चुकेगी, यह कल्पना कितनी डरावनी है। यह एक ऐसी चेतावनी है जिसे लेखक ने उन बच्चों को बताना चाहा है, जो बड़े होकर इक्कीसवीं सदी में जाएंगे।

'कोई' शीर्षक कहानी जीवन में आशा और विश्वास जगाती है। यहाँ 'जनरल विंटर' (सर्दी का मौसम) चारों ओर अपना साम्राज्य स्थापित किए है। हर जगह उसने बर्फ़ की मोटी परतें लगा रखी हैं ताकि सूरज उसके साम्राज्य में घुस न पाए। लेकिन अचानक सूर्य की किरणें उसके साम्राज्य में घुस जाती हैं। चारों ओर वसंत का मौसम आ जाता है। हर जगह ख़ुशी और खिलखिलाहट भर जाती है। ऐसे में ज़मीन के अन्दर दबे डेन्डेलियन फूल और बटरबर के पौधे में बातचीत होती है कि उन्हें ऊपर निकलना चाहिए या यहीं चुपचाप सोना चाहिए। अंततः वे कुछ देर तक पृथ्वी के ऊपर का नज़ारा देखने के लिए निकलते हैं। सूरज की रोशनी के कारण वे चारों ओर ख़ुशहाली देखते हैं। लेकिन कुछ देर में वे वापस ज़मीन के अन्दर जाने का निश्चय करते हैं, जो कि सम्भव नहीं। तब वे महसूस करते हैं कि जीवन तो बढ़ते रहने का ही नाम है। मौत से क्यों डरें। वह तो सब की नियति है। वे निश्चय करते हैं कि हमें काम में जुट जाना चाहिए, रोशनी में बढ़ना चाहिए और वे वसंत के मौसम में ख़ुश होकर बढ़ने लगते हैं।

'रेगिस्तान का डायनोसौर' कहानी एक ऐसे काफ़िले पर लिखी गई है, जिसे हम दूसरे अर्थों में

मानव-जाति का समूह कह सकते हैं। आज के मनुष्य की लोलुपता, स्वार्थ और उसके आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्व को इस कथा में चित्रित किया गया है। (यह कहानी इसी अंक में प्रकाशित हुई है।)

'आख़िर कहाँ से आता है वसंत' इस कथा-संग्रह की अंतिम कहानी है। इसमें भूख और ग़रीबी से सताए लोगों की त्रासदी और इसके बावजूद भावी-पीढ़ी में सुरक्षित आशा और विश्वास जाग्रत किया गया है। बन्दरों का मुखिया दानकिची बहुत परेशान है- क्योंकि इस वर्ष सूखा पड़ा है और जंगल में कहीं भी फूल-फल खाने के लिए नहीं हैं। उसे याद आता है जब इसी तरह एक बार सूखा पड़ा था और भूख से तंग आकर एक किसान ने अपने बच्चों को ज़हरीले फल खिलाने के साथ-साथ स्वयं भी खाकर आत्महत्या कर ली थी। वह उस कल्पना मात्र से कांप जाता है। लेकिन बन्दरों के समूह में भूख से व्याकुल होने के कारण स्थिति बिगड़ने लगती है। दानकिची सोचता है कि वह भी वैसे ही ज़हरीले फल लाकर दे दे तो सब ख़त्म हो जाएंगे। पर नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकता। तभी बच्चे और युवा बन्दर विद्रोह कर देते हैं। उनका कहना है कि हम इस परम्परागत और पुश्तैनी पर्वत पर क्यों बंधे रहें। दूर इस पर्वत के पार वसंत आ चुका है और वहाँ बहुत कुछ खाने के लिए है। कुछ परम्परावादी बूढ़े बन्दरों ने विरोध किया तो नई पीढ़ी ने उनकी उपेक्षा की और उस ओर चल दिए जहाँ वसंत आ चुका है। आख़िर हारकर वे बूढ़े भी बच्चों के पीछे-पीछे चले...

ताजिमा शिन्ज़ी की ये सभी कहानियाँ बड़ी सशक्त और प्रभावशाली हैं। उनका यह कथन बहुत ही सार्थक है - '*हर जीवित वस्तु बच्चे की तरह होती है, क्योंकि ये सभी उस सूरज की तरफ मुँह किए होते हैं, जो विकास के लिए आवश्यक प्रकाश और ऊर्जा प्रदान करता है। इक्कीसवीं शताब्दी का मुकाबला करने वाले युवाओं के लिए अंधेरे में रोशनी बिखेर देना एक चुनौती भरा काम हो सकता है।*' किन्तु मैं कहूंगा कि ताजिमा शिन्ज़ी अपने इस उद्देश्य को पूरा करने में सफल हुए हैं। बधाई। आशा है भारतीय बाल साहित्य के लेखक प्रेरणा लेंगे कि आज का वास्तविक बाल साहित्य क्या है? क्या हम अपने देश के बच्चों को ऐसा कुछ दे सकेंगे?

किताब: अचरज ग्रह की दंतकथा
लेखक: ताजिमा शिन्ज़ी
हिन्दी अनुवाद: हरीश नारंग
प्रकाशक: साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, 35 फिरोज़शाह रोड, नई दिल्ली 110-001
पृष्ठ संख्या- 64, मूल्य: चालीस रुपए।

फार्म 4 (नियम 8 देखिये)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी भोपाल- 462016
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी भोपाल-462016

संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी रोज़ारियो, एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जनवरी, 1994

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

माथापच्ची

(1)

पिछले दिनों चीनी के भाव में 10% की बढ़ोत्तरी हो गई। गणपत बिचारा क्या करता। घर के बजट को बिगाड़ने से बचाने के लिए उसने चीनी की खपत कम कर दी। कई बार वह गुड़ की चाय पी जाता।

फिर कुछ दिनों बाद भाव 10% घट गया। तब गणपत ने पहले की तरह ही ज़रूरत के मुताबिक चीनी ख़रीद ली।

उसे चीनी कब सस्ती मिली होगी? भाव बढ़ने से पहले या घटने के बाद?

(2)

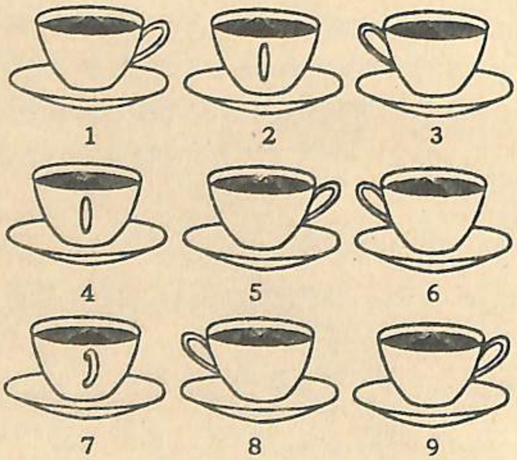

कप-तश्तरियों की इस भीड़ में, हर लाइन में एक क्रम है। पर एक कप कुछ बेमेल है। कौन-सा है वह?

(3)

मन्नू की जेब में 11 सिक्के थे। सिक्कों का जोड़ कुल एक रुपए से ज़्यादा और दो रुपए से कम निकला। बताओ, कौन-कौन से सिक्के थे?

(4)

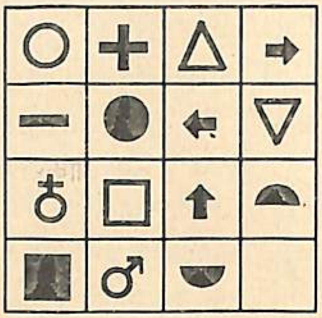

क्या तुम बता सकते हो कि चित्र के ख़ाली खाने में क्या आएगा?

(5)

यहाँ संख्या 15 को दर्शाने के लिए अंक 4 का उपयोग चार बार किया गया है। दो अलग-अलग तरह से।

15= (4X4) - 4/4

15= 44/4 + 4

क्या इसी तरह तुम भी 1, 3, 4, 8, 9, 17, 18, 24, 32........ को भी अंक 4 का चार बार उपयोग करके दर्शा सकते हो?

कोशिश कर देखो, एक तरह से ही सही।

(6)

मेरे पास एक घन सें.मी. के कई गुटके है यदि मैं इन गुटकों की मदद से आठ घन सें.मी. का बड़ा गुटका बनाना चाहती हूँ तो मुझे आठ गुटकों की ज़रूरत होगी। ठीक है न। मैंने इस से भी बड़ा घन बनाया। इस घन की विशेषता है कि जब मैं इस घन के सारे गुटकों को सटाकर ज़मीन पर रखती हूं तो एक चौकोर बनता है।

बताओ मैंने कितने गुटकों का उपयोग किया।

(7)

एक जहाज़ 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बम्बई से दुबई जा रहा है। जहाज़ पर दो आदमी गेंद खेल रहे हैं। एक आदमी जहाज़ के सामने वाले हिस्से में खड़ा है और दूसरा पीछे के हिस्से में।

अब बताओ, दोनों में से कौन ज़्यादा आसानी से गेंद फेंक सकता है?

ज़रा देशों के नाम तो छांटो :

1. घुंघरू सविता ने पहने।
2. आभा रतन से बड़ी है।
3. मम्मी ने पालक की सब्ज़ी बनाई।
4. लाला, जा पान ले आ।

■ प्रगति पवार, आठवीं, धार

वर्ग पहेली - 31

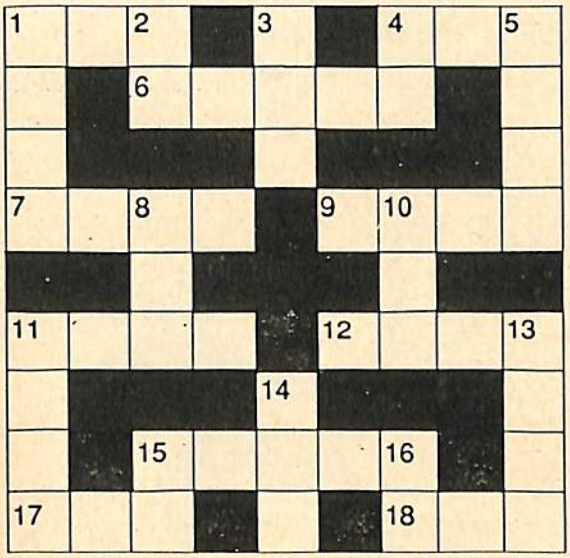

संकेत : बाएं से दाएं

1. 'अचानक दीदार' में नकद राशि वाली फ़सल (3)
4. धक्का मारने में ढूंढो पटाखे की आवाज़ (3)
6. बदलाव (5)
7. ऑप्रेशन के लिए बोलचाल की भाषा का शब्द (4)
9. काम भी यह की पूंछ काटकर विशाल ढूंढो (4)
11. नभ याक की उलटफेर में डरावना (4)
12. अंधों में ...., ..., एक मुहावरा (2,2)
15. रसायन सम्बंधी (5)
17. 'बात ही' की गड़बड़ी में बर्बादी (3)
18. केवल (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. भयानक लचीला में नकल करने वाला (4)
2. दीया (2)
3. खरगोश का बच्चा (3)
4. रुपया - पैसा या जोड़ने का चिन्ह (2)
5. काम करने की जगह (4)
8. जिस माह में होली मनाई जाती है (3)
10. एक प्रकार का कपड़ा (3)
11. डरा हुआ (4)
13. वह जो दूसरों को ठगने के लिए बनावटी कागज़ात बनाए (4)
14. बड़ी नाव, एक उपनाम भी (3)
15. हीरा पलटकर पथिक मिले (2)
16. उल्टे चमक में थोड़ा (2)

■ लक्ष्मण सिंह क्षत्री, कोरजा, पेण्ड्रारोड, बिलासपुर द्वारा भेजी पहेली पर आधारित

● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 31 का हल मार्च, 94 अंक में देखें।

टोकरी

खेल खेल में इस बार काग़ज़ की पट्टियों की टोकरी बनाते हैं। इसके लिए दो रंगों की पट्टियाँ, कैंची, गोंद, पेंसिल, स्केल इक्ट्ठे कर लो। अगर रंगीन काग़ज़ न हो तो अख़बार भी ले सकते हो। नीचे दिए चित्रों को देखो और टोकरी बनाते चलो।

1. दोनों रंगों की पट्टियाँ काटो। पट्टियाँ 10 से.मी. चौड़ी और 30 से.मी. लम्बी होंगी। पट्टियों को चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

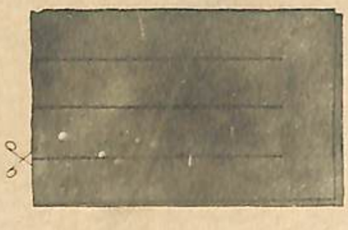

2. अब पट्टियों पर चित्र के अनुसार पेंसिल से निशान लगाओ। लम्बाई में निशान 2.5 से.मी. की दूरी पर लगाना। और ऊपर के खुले सिरे की तरफ भी लगभग 2.5 से.मी. जगह छोड़ देना। अब बन्द सिरे से निशान पर से कट लगाओ।

3. दोनों पट्टियों पर कट लगा लेने के बाद चटाई बुनने का काम करना है। सबसे पहले 'अ' पट्टी को '1' पट्टी की सतहों के बीच रखो फिर '2' पट्टी को 'अ' पट्टी की सतहों के बीच रखो फिर

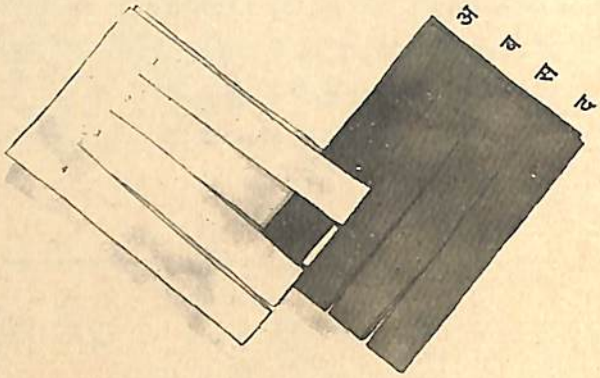

'अ' पट्टी को '3' पट्टी की सतहों के बीच रखो और फिर '4' पट्टी को 'अ' की सतहों के बीच रखो। यह हुई 'अ' पट्टी की बुनाई।

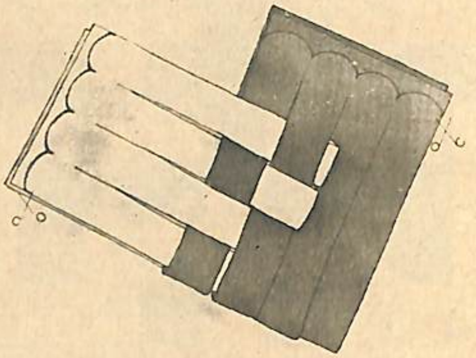

4. अब 'ब' पट्टी की बुनाई करने में थोड़ा फ़र्क है। वो यह कि पहले 'ब' पट्टी की सतहों के बीच '1' पट्टी रखना है फिर '2' पट्टी की सतहों के बीच 'ब' पट्टी आएगी इसी तरह आगे भी बुनते जाओ। हाँ 'स' पट्टी को 'अ' पट्टी की तरह बुनना और 'द' पट्टी को 'ब' पट्टी की तरह। बुनाई पूरी होने के बाद पट्टी के ऊपरी हिस्से पर चाहो तो चित्र में दिखाए अनुसार डिज़ाइन बना लो।

5. टोकरी तो बन गई। बन गई न? अब तनी लगाने के लिए कागज़ की ही एक लम्बी सी पट्टी काटो। इस पट्टी को टोकरी के अन्दर की तरफ से चिपका दो।

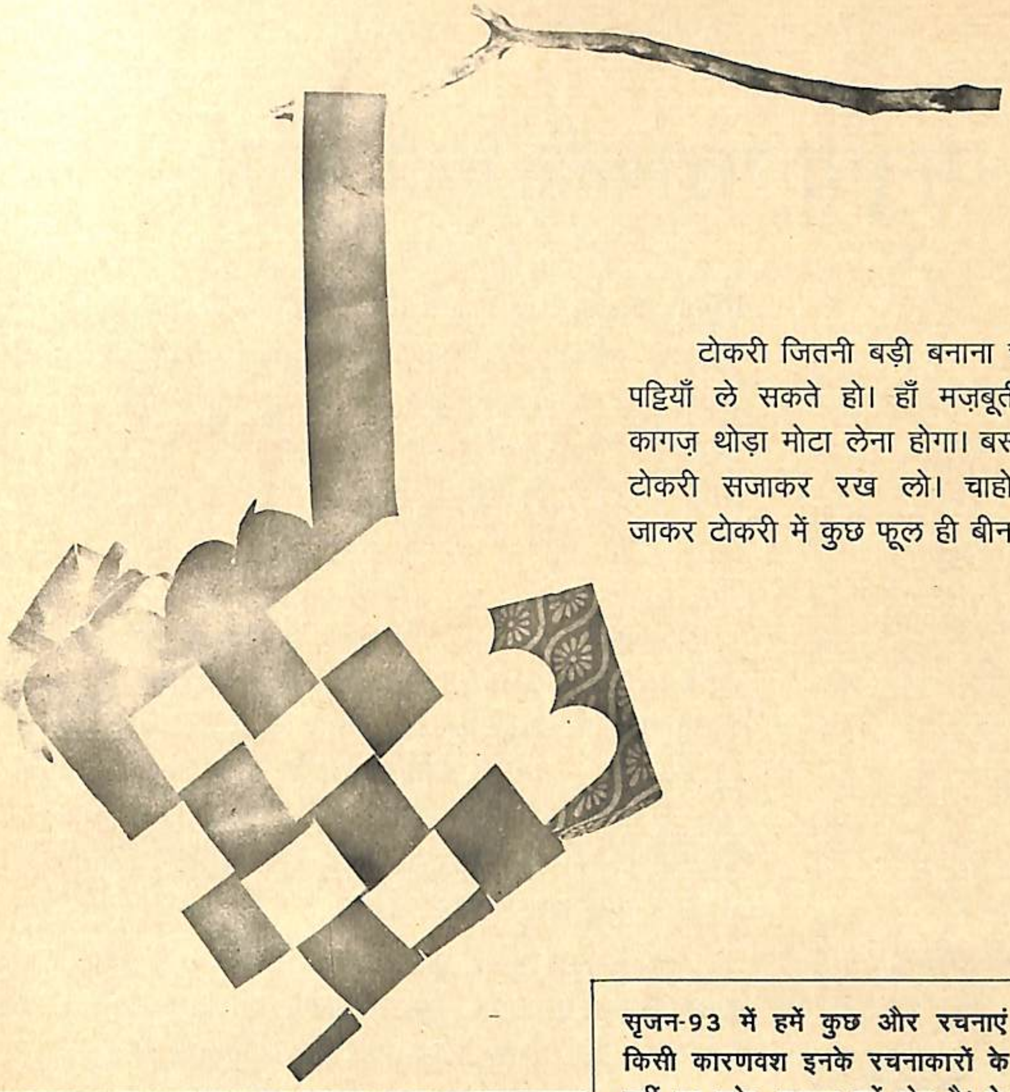

टोकरी जितनी बड़ी बनाना चाहो उतनी लम्बी पट्टियाँ ले सकते हो। हाँ मज़बूती के लिहाज़ से कागज़ थोड़ा मोटा लेना होगा। बस, अब चाहो जहाँ टोकरी सजाकर रख लो। चाहो तो सुबह-सुबह जाकर टोकरी में कुछ फूल ही बीन लाओ।

खेद है...!

सौवें अंक में पृष्ठ 121 पर 'इम्तहान' शीर्षक कविता निर्मित कुमार व्यास, सैलाना, रतलाम के नाम से प्रकाशित हुई है। इस कविता को सृजन में चुनी कविताओं में शामिल किया गया था। अब हमें पता चला है कि यह कविता निर्मित की नहीं है, बल्कि उन्होंने बालभारती पत्रिका के अक्टूबर, 90 के अंक में प्रकाशित एक एकांकी से लेकर भेजी है। इस एंकाकी के लेखक कानपुर के श्री चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' हैं।

यह जानकारी हमें स्वयं मयंक जी ने व्यक्तिगत रूप से दी है। पिपरिया, होशंगाबाद के कमलेश साहू का पत्र भी इस संदर्भ में प्राप्त हुआ है।

इस कविता के इस तरह से प्रकाशन का हमें खेद है। निर्मित से हम यही कहेंगे कि चकमक का उद्देश्य बच्चों को उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति का मौका देना है। इसलिए वे अपनी मौलिक रचनाएँ ही हमें भेजें।

❑ सम्पादक

सृजन-93 में हमें कुछ और रचनाएं भी प्राप्त हुईं थीं। किसी कारणवश इनके रचनाकारों के नाम सौवें अंक में नहीं जा सके, इसका हमें खेद है। ये रचनाकार हैं- पंकज पोरवाल; शिवशंकर; दशरथ कुमार शर्मा, पाँचवीं; जानकीलाल, तेरह वर्ष; बालागुड़ा। सपना कुमारी, भुजावदिया। ध्रुव गुप्ता, नौ वर्ष, मनासा। गोवर्धनसिंह चौहान, गोविन्दसिंह चौहान, तलहटी। सुधीर महाजन, सोलह वर्ष; अनिल भट्ट, रामपुरा। मुकेश मालवीय, नवमीं, खोखरा। सभी ज़िला **मंदसौर**। सुरेश चन्द्र रावत, बारहवीं, लहर्रा। वर्षा श्रीवास्तव, गोपालपुरा। सभी ज़िला **मुरैना**। संजय, नौगांव; रानू परमार, सीमा अग्रवाल, टिकेश राणे, राकेश चौहान, आशीष राठौड़, प्रमिला, सावित्री डावर, सुगना कहारे, धार। सभी जिला **धार**। विनोद वर्मा, जमोनिया; अरविंद कारपेंटर, जयश्री कारपेंटर, चेतना खरे, देवास। सभी जिला **देवास**। अरूणेश कुमार लोखण्डे, चिल्लकापुर, **बैतूल**। रामायणसिंह नेताम, सिंगनपुर, नयापारा **बस्तर**। इन्द्रपाल वास्कले, गाड़ी सरई, **सरगुजा**। गीता आखरे, सुल्तानगंज, **रायसेन**। पुष्पेंदर कौर अरोरा, चौथी, **नरसिंहपुर**। शैली जोशी, दसवीं, जादूटोला, **राजनांदगांव**। रविकांत नागर, नवमीं; चन्द्रकांत नागर, आठवीं;राजगढ़। अजय कुमार विश्वकर्मा, आठवीं, छपरा, **सिवनी**। विद्याधर द्विवेदी, दसवीं, पटेहरा; नीरज सिंघल, छठवीं; चित्रा गुप्ता, **रींवा**। अरविंदसिंह ठाकुर, पन्द्रह वर्ष, **सतना**। संदीप कुमार, आठवीं, **सागर**। स्मिता गुप्ता, पाँचवीं, **शिवपुरी**। नितिन खरे, निवाड़ी; आलोक खरे, रिया श्रीवास्तव, **टीकमगढ़**। उपमा शर्मा, छह वर्ष, **विदिशा**। सभी **मध्यप्रदेश**। राहुल मिश्र, शुक्लपुर, **इलाहाबाद, उ.प्र.**। राजा प्रताप, **पटना**। रॉकी, बिहार शरीफ, **नालंदा**। **बिहार**। मनदीप कुमार, नया नंगल, रोपण, **पंजाब**। इन सभी को सौवें अंक की एक-एक प्रति भेजी गई है।

मनुष्य महाबली कैसे बना!

किन्ही कारणों से, जो अभी तक समझ में नहीं आ सके हैं, बर्फ़ की बड़ी-बड़ी नदियाँ, ढलानों को रौंदती हुई, पहाड़ियों की चोटियों को काटती हुई, चट्टानों को तोड़ती और चूर-चूर करती हुई और टूटी हुई चट्टानों के बड़े-बड़े अम्बारों को बहाती हुई पहाड़ों और मैदानों पर बहने लगीं। हिमनदियों के मुखों पर पिघलती बर्फ ने तूफानी नदियों को जन्म दिया, जिन्होंने पृथ्वी पर नदियों की तलहटियाँ बनाते हुए खाइयाँ खोद दीं।

हिमनदियाँ धीमी गति से आगे बढ़ती रहीं और प्रागैतिहासिक मनुष्य धरती पर जिन जगहों पर रह रहा था, वहाँ तक, उनकी ठण्डक पहुँचने में काफ़ी समय लग गया। समुद्र के प्राणियों ने ही बर्फ़ानी झोंके को सबसे पहले अनुभव किया। समुद्र के किनारे के प्रदेश अभी तक गरम ही थे। जंगल वृक्षों से भरे हुए थे। मैदानों की ऊँची घास में भीमकाय दक्षिणी हाथी और गैंडे घूमा करते थे। लेकिन समुद्रों में पानी लगातार ठण्डा होता जा रहा था।

सागरतटीय कगार हमें गरम समुद्रों के ठण्डे होने की कहानी बताते हैं। एक ऐसे समय, जब ऊष्माप्रेमी पशु और पौधे तक भूमि पर निवास कर रहे थे, समुद्रों की आबादी बदलने लगी थी। अगर हम उस काल के जीवाश्मों का अध्ययन करें, तो हमें मोलस्क प्राणियों के कवच मिलेंगे, जो केवल ठण्डे पानी में ही रह सकते हैं।

हिमनदियों के आगमन को धरती पर भी अनुभव किया जाने लगा।

जंगलों का महायुद्ध शुरू हो चुका था।

जंगल अब भी एक-दूसरे से जूझ रहे हैं। देवदार और एस्प (एक तरह के चिनार का वृक्ष) जानी दुश्मन हैं। एस्प को छाया से चिढ़ है, जबकि देवदार को इससे कोई परहेज़ नहीं।

अगर देवदार वन में तुम्हारी निगाह एस्प वृक्षों पर पड़े, तो तुम देखोगे कि वे नन्हें अंकुर जितने ही हैं - छायादार देवदार उन्हें बढ़ने ही नहीं देते। लेकिन जब लकड़हारे देवदार को काट डालते हैं, तो तेज़ धूप में एस्प फिर जी उठते हैं और तेज़ी के साथ बढ़ने लगते हैं।

फिर सब कुछ बदलने लगता है - देवदार की जड़ों के पास जो छायाप्रेमी काई उग आती थी, वह मुरझाकर मर जाती है। जो देवदार छोटे थे वे पीले पड़ जाते हैं। जब उनके पिता विशाल देवदार जीवित

थे, तो उनकी हरी बांहों के साये के नीचे नन्हें देवदार मज़े में रहते थे। लेकिन जब वे खुले में अकेले रह गए, तो वे पीले पड़ गए और उन्होंने बढ़ना बन्द कर दिया।

अब एस्प विजयी हो गए। पहले, उन्हें धूप के वे टुकड़े ही मिल पाते थे, जिन्हें उनके शत्रु देवदार अपनी टहनियों से गुज़रने देते थे। जब देवदार काट दिए गए, तो एस्प जंगल के राजा बन गए।

कुछ ही वर्षों में, जहाँ पहले देवदार का काला जंगल था, वहाँ हमें एस्प का चमकदार जंगल नज़र आता है।

लेकिन समय गुज़रता है। धीरे-धीरे, और इस तरह कि आरम्भ में एकदम नज़र में आता ही नहीं, वह इस जंगल का पुनर्निर्माण कर देता है। एस्प ऊँचे और ऊँचे होते चले जाते हैं और उनकी घनी फुनगियाँ लगातार पास आती चली जाती हैं। उनके तनों पर पड़ने वाली छाया, जो पहले मामूली-सी और चलती-फिरती थी, घनी और गहरी हो जाती है। एस्प देवदार के साथ अपनी लड़ाई जीतते हैं, लेकिन उनकी विजय ही उनकी मृत्यु का कारण बनती है।

अपनी छाया से कभी कोई आदमी नहीं मरता। फिर भी पेड़ के जीवन में ऐसा अक्सर होता है। शाखदार एस्पों के नीचे छोटे और अशक्त नन्हें देवदार होते हैं। कुछ समय के बाद में ये नन्हें शत्रु फिर जी उठते हैं। एस्प की गिरी हुई पत्तियों की मोटी चादर, नीचे ज़मीन को गरम रखती है और जल्दी ही वह नन्हें देवदार के पत्तों से भी ढक जाती है। बीस वर्षों में देवदार की चोटियाँ एस्पों की चोटियों तक पहुँच जाती हैं। जंगल हवादार, प्रकाशपूर्ण और मिला-जुला हो जाता है। एस्पों का हल्का हरा रंग देवदारों की नुकीली चोटियों से गुंथता जाता है। देवदार ऊँचे और ऊँचे होते चले जाते हैं और कुछ समय के बाद एस्पों पर छाया डालना शुरू कर देते हैं।

एस्पों का काल आ जाता है। देवदार की छाया में वे मुरझाने लगते हैं। देवदार जंगल में छा जाते हैं। वे अपना पूर्व बल फिर प्राप्त कर लेते हैं।

आदमी और उसके कुल्हाड़े जब उनके जीवन में हस्तक्षेप करते हैं, तो जंगल इसी तरह आपस में जूझते हैं।

लेकिन हिम-युग की सर्दी ने उनके जीवन में हस्तक्षेप किया, तो जंगलों की लड़ाई और भी प्रचण्ड हो गई।

ठण्ड ने ऊष्माप्रिय पेड़ों को मार दिया और उत्तर के जंगलों के लिए रास्ता खोल दिया। चीड़, देवदार और भुर्ज (भोजपत्र) ने बांज और लिंडन के खिलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया। बांज और लिंडन को पीछे हटना पड़ा, और इसमें उन्होंने सदाबहार पेड़ों में से बच रहे अंतिम पेड़ों - लॉरेल, मैग्नोलिया (एक तरह का चम्पा) और अंजीर - को धकेल

बाहर किया।

लाड़ में पले, ऊष्माप्रिय पेड़ सभी तरह की हवाओं और ठण्ड के लिए खुली, आश्रयहीन जगहों में ज़िन्दा न रह सके और इसलिए वे मर गए। केवल पहाड़ों में ही उन्हें आश्रय मिला। वहाँ हर घाटी में ऊष्माप्रिय पेड़ छिपे रहे। लेकिन फिर पर्वतीय चोटियों से हिमनदियों ने उतरना शुरू कर दिया और वे अपने साथ-साथ पहाड़ी देवदारों और भुर्जों को ले आईं, जो उन पर छा गए।

जंगलों की यह लड़ाई हज़ारों साल चली। और पराजित सेना के अंतिम दस्ते, ऊष्माप्रेमी पेड़, लगातार दक्षिण की तरफ हटते चले गए।

लेकिन जब जंगल आक्रमणकारियों के ख़िलाफ़ लड़ाई में खेत रहे, तो उन जानवरों का क्या हुआ जो जंगलों में रहते थे?

आधुनिक समय में जब कोई जंगल आग से नष्ट हो जाता है, या काट दिया जाता है, तो उसके कुछ निवासी उसी के साथ ख़त्म हो जाते हैं, जबकि अन्य बच निकलते हैं। जब कोई देवदार वन काटा जाता है, तो उसके स्वाभाविक निवासी तथा अन्य पशु ग़ायब हो जाते हैं। छायादार देवदार वन में उनके घरों की जगह एक नया एस्प वन ले लेता है। नए घर में अन्य पक्षी और पशु अपना बसेरा कर लेते हैं। कई वर्षों के बाद, जब देवदार एस्पों को फिर परास्त कर देते हैं, तो नया देवदार वन ख़ाली नहीं होता - वह फिर पुराने निवासियों से भर जाता है।

हिमयुग में जो हुआ, वह भी यही था। जब उष्णकटिबंधीय वन लुप्त हुए, तो जन्तु-जगत भी अदृश्य हो गया। भीमकाय हाथी ग़ायब हो गए, गैंडे और हिप्पोपोटैमस (दरियाई घोड़े) दक्षिण की ओर चले गए। कितने ही छोटे जंतु और पक्षी भी मर गए या दक्षिण की ओर भाग गए। और कुछ हो ही नहीं सकता था। हर जन्तु अपनी नन्हीं दुनिया से, अपने जंगल से बँधा होता है। जब यह वन-विश्व नष्ट होने लगा, तो इसने अपने कितने ही निवासियों को नष्ट कर दिया।

जब पेड़, झाड़ियाँ और ऊँची घासें सूख गईं, तो जो जन्तु नीचे छिपे रहते थे और उनसे पोषण पाते थे, उन्होंने अपने आपको बिना भोजन और आश्रय के पाया। लेकिन जब ये शान्त शाकभक्षी जानवर मर गए तो अन्य जन्तु भी - वे माँसभक्षी जानवर, जो उन्हें खाया करते थे - भूखों मर गए।

"पोषण-चक्रों" में एक साथ बँधे पशु और पेड़-पौधे, अपने जंगल के मरने पर सभी मर गए।

किसी न किसी प्रकार बच पाने के लिए जानवर के लिए अपनी ज़ंजीरों को तोड़ना आवश्यक था - जिस भोजन का वह आदी था, उसे उससे दूसरे प्रकार का जुटाना आरम्भ करना था, उसे अपने पंजे और

दाँत बदलने थे और अपने को ठण्ड से बचाने के लिए लम्बे बाल या समूर उगाना था। दूसरे शब्दों में, स्वयं जन्तु को ही बदलना था।

हम जानते हैं कि पशु के लिए बदलना कितना कठिन है। घोड़े के इतिहास की और उसे हमारे परिचित आज के रूप में पाँव में एक ही उंगलीवाला जानवर बनने में कितने लाख वर्ष लगे, इसकी याद करो।

दक्षिणी जन्तु के लिए उत्तरी वन में जीवित बच पाना बहुत कठिन था।

और मानो यही काफ़ी न हो, उत्तरी जंगलों के झबरे निवासी भी उनके साथ-साथ दक्षिण की ओर आने लगे। ये रोएँदार गैंडे, मैमथ (हाथी की एक प्रजाति, जो अब जीवित नहीं है) गुफावासी शेर और गुफावासी रीछ थे, जो सब-के-सब उत्तरी जंगलों में मज़े से रहते थे।

उनकी मोटी, बाल भरी चमड़ी ही उनकी सबसे बड़ी निधि थी। ठण्ड मैमथ और रोएँदार गैंडे का कुछ भी न बिगाड़ सकती थी, उनके गरम, झबरी खाल थी, लेकिन दक्षिणी हाथी, गैंडे और हिप्पोपोटैमस की बात बिलकुल उलटी थी।

कुछ उत्तरी पशुओं ने सरदी से बचने का एक अलग तरीक़ा निकाल लिया - वे गुफाओं में छिप गए।

उत्तरी पशुओं को नए जंगल में भोजन ढूँढने में बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ती थी, क्योंकि यह उनका अपना वन था, यह उनकी अपनी दुनिया थी।

नष्ट हुए वनों के पशुओं को अब उत्तरी वनों के नए स्वामियों के साथ लड़ना पड़ा।

लेकिन प्रागैतिहासिक मनुष्य? उसका क्या हुआ?

जो लोग गरम देशों में रहते थे, उन्हें जीने के लिए ठण्ड के खिलाफ़ लड़ना नहीं पड़ा, यद्यपि वहाँ भी जलवायु ठण्डी हो गई थी। लेकिन उन मनुष्यों की हालत ज़्यादा ख़राब थी, जिन्होंने बढ़ती हिमनदियों के पूरे प्रकोप को झेला। हर साल वे एक नई ही सर्दी का सामना करते। यह सर्दी भयानक थी। वे काँपते और ठण्ड से जमे जाते।

भूख, भयानक पाला और जंगली जानवर मानो उन्हें पूरी तरह ख़त्म करने पर ही तुले हुए थे।

अगर इन प्रारम्भिक मनुष्यों को इस बात का ज्ञान होता कि उनके आसपास सभी जगह क्या हो रहा है, तो वे शायद यह मान लेते कि संसार का अंत आ गया है।

(अगले अंक में जारी)
'मनुष्य महाबली कैसे बना!' से साभार
प्रस्तुतिः राजेश उत्साही

माथा पच्ची - हल : अक्टूबर, 93 अंक के

2. ईंट नम्बर तीन।
3. तितलियों की जोड़ी इस तरह बनेगी 1-6, 2-8, 3-7 और 4-5।
4. बस स्टॉप पर तीन नं. बस के आने के एक मिनट बाद सात नम्बर बस आती है। उसके नौ मिनट बाद फिर तीन नं. बस आती है। मतलब यह कि हर दस मिनट में से नौ मिनट, तीन नं. बस का ही इंतज़ार रहता है। जबकि सात नं. बस का सिर्फ़ एक मिनट। इसलिए जो व्यक्ति इस रूट पर अक़्सर सफ़र करता है उसको दस में से नौ बार तीन नं. बस ही मिलती है।
5. तीन बिंदु हमेशा एक ही तल में होते हैं पर चार बिन्दुओं के लिए ऐसा होना आवश्यक नहीं।
6. नमक के घोल में अण्डा तैरेगा। ऊपर से साफ़ पानी डालने पर अण्डा नीचे की तरफ जाएगा। क्योंकि घोल का आपेक्षिक घनत्व घटता जाएगा।

वर्ग पहेली-28 का हल

1 आ	धु	2 नि	क	3 ता	■	4 स	रो	5 ज
रा	■	क	■	6 ला	चा	र	■	ग
7 भ	8 शा	ल	■	ब	■	9 स	ला	म
■	य	■	10 सां	■	11 अ	■	■	गा
12 घ	र	का	भे	दी	लं	का	13 डा	ए
ब	■	■	र	■	गा	■	ढ	■
14 रा	क्ष	15 स	■	16 अ	■	17 बे	स	18 न
ह	■	19 म	खा	ना	■	द	■	र
20 ट	स	र	■	21 म	हा	म	हि	म

वर्ग पहेली-29 का हल

1 सा	ई	ज	नि	2 क	■	3 अ	■	4 मुँ
धो	■	■	■	5 द	म	न	■	ह
6 दे	शां	7 त	र	■	■	8 क	स	में
बो	■	म	■	9 जू	10 ला	हा	■	पा
11 ज	ई	■	12 प	■	मा	■	13 ना	नी
ग	■	14 क	रे	ला	■	15 भा	■	भ
16 बौ	छा	र	■	■	17 का	ला	जा	र
रा	■	18 त	स	19 ब	■	■	■	आ
ना	■	ब	■	20 म	ह	म	हा	ना

वर्ग पहेली- 28 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं- अमित सिंह चौहान, अदिति वागेश्वरी, **होशंगाबाद**। प्रियंका दुबे, स्वर्णा चौरसिया, सोनल चावला, इंदौर। राजेश गुरवानी, **सीहोर**। विद्या नागदोने, **बालाघाट**। महेन्द्रसिंह भोंसले, राखी बुजुर्ग; प्रदीप ताहेड़, बड़वानी; कुलदीप सिंह राय, मांगीलाल भावसार, **खरगोन**। अरविंद पुरोहित, भारती साहू, इन्दागाँव; सुनीता साहू, डोंगरडुला; **रायपुर**। मो. सरफराज़ नवाज़, एल. एन. एस. राठौर, चाम्पा; मुरली मनोहर पटेल, भैंसमा; **बिलासपुर**। दुर्गेश कुमार, श्वेता डठोरे, खेड़ली बाजार; हितेष लौखण्डे, भैंसदेही, **बैतूल**। अविनाश चंद्र डोंगरे, जुन्नारदेव, **छिंदवाड़ा**। बसंत तिवारी, शिल्पा माहेश्वरी, **भोपाल**। अरविंद सिंह ठाकुर, **सतना**। श्रद्धा महंत, गजमा; संजय देवांगन, **रायगढ़**। **सभी** मध्यप्रदेश। हर्षा डहाके, घरुड़, **अमरावती, महाराष्ट्र**। रूबल सैनी, **गाज़ियाबाद**। अनुरूचि पाण्डे, जाखनदेवी, **अल्मोड़ा, उ. प्र.**।

वर्ग पहेली- 29 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं- अवधविहारी लाल सक्सेना, **लखनऊ, उ.प्र.**। कीर्ति कुमार मरकाम, रंजना, **बिलासपुर**। तृषा सक्सेना, इन्दौर। चन्द्रभान सिंह पटेल, घरघोड़ी, **रायगढ़**। वर्तिका श्रीवास्तव, **भोपाल**। आरती सिंह, पाण्डुका, **रायपुर**। **सभी मध्यप्रदेश। इन सभी को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।**

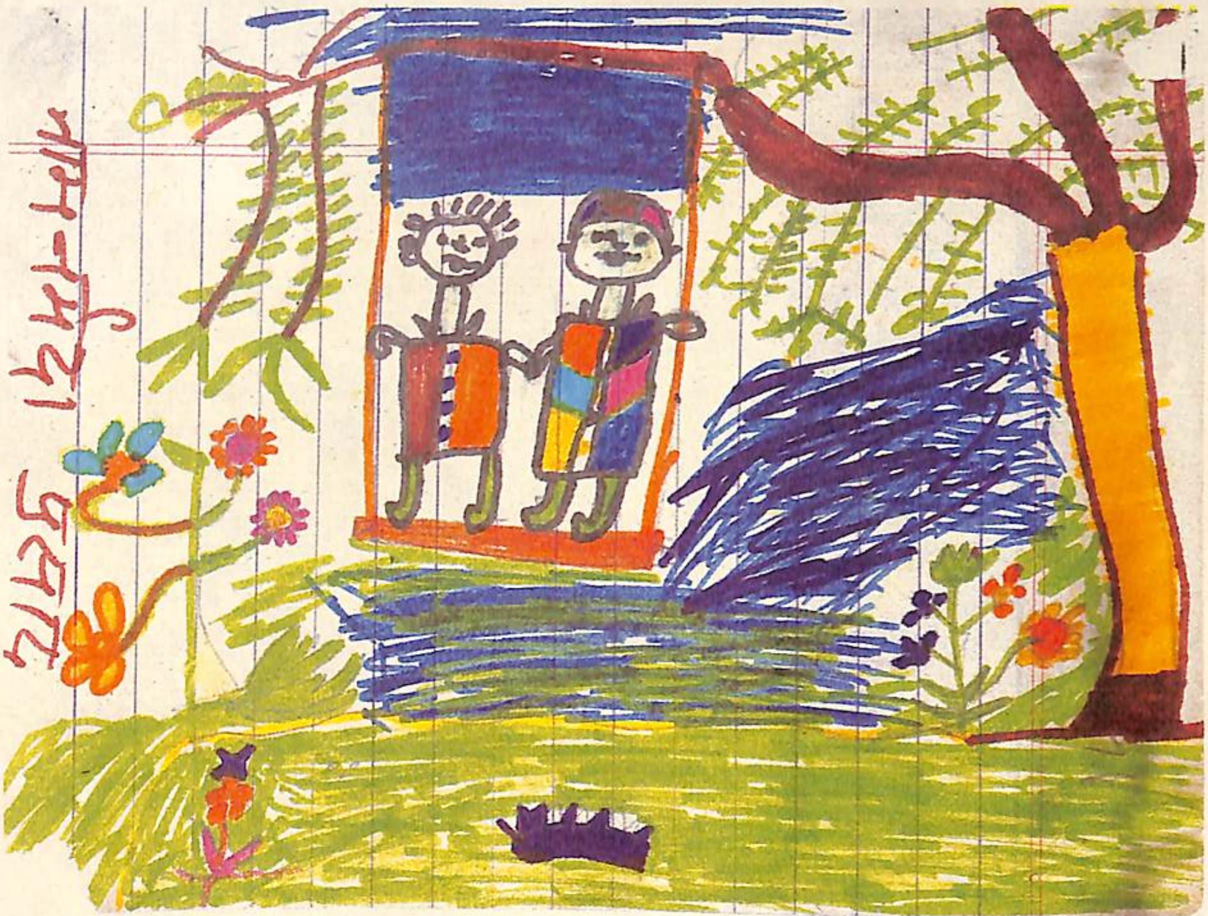

नर्मदा प्रसाद, राजाबरारी, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

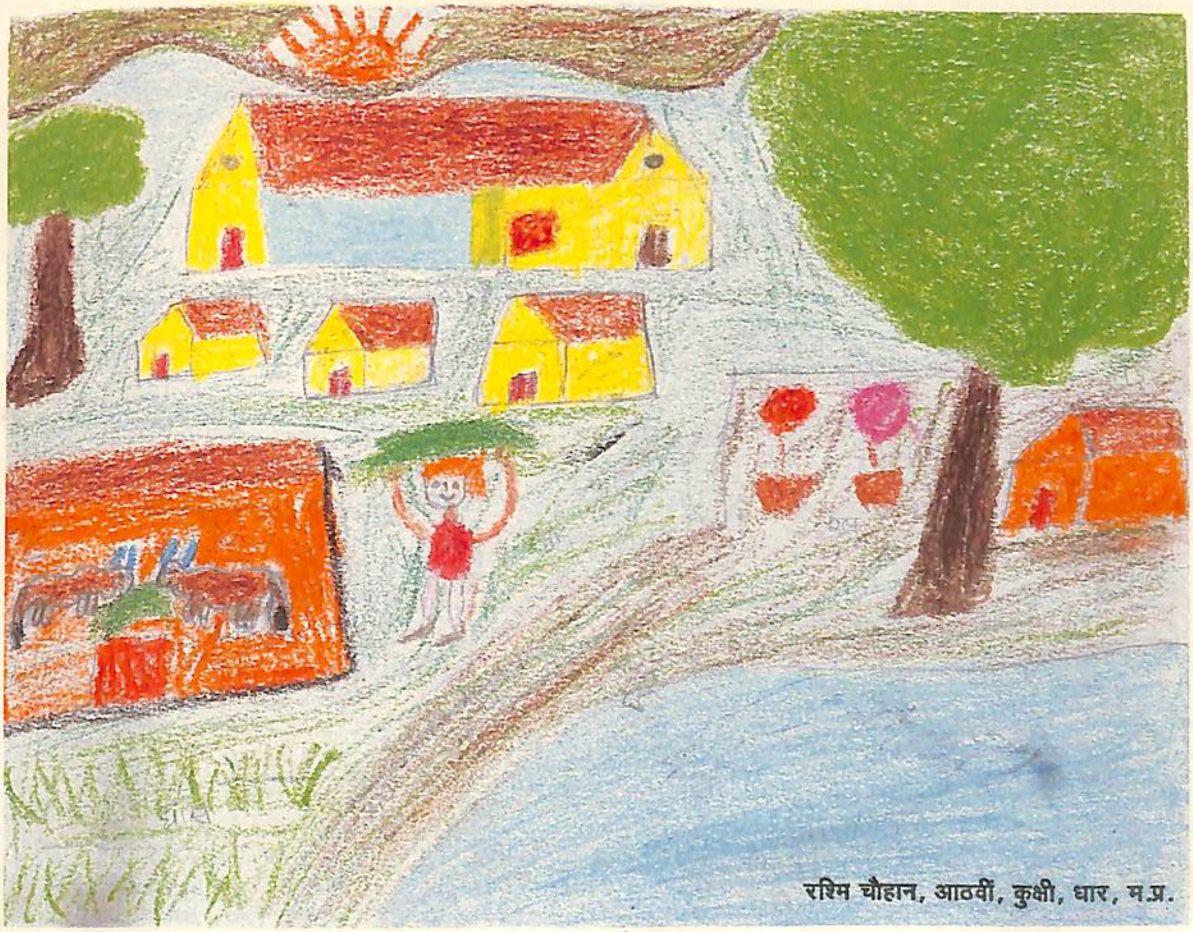

रश्मि चौहान, आठवीं, कुक्षी, धार, म.प्र.

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/94

लोकेश कुशवाह, करकटी, शहडोल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना